Chapter-5

पंचम अध्याय

महादेवी वर्मा के गद्य-साहित्य में सामाजिक चेतना

पंचम अध्याय

महादेवी वर्मा के गद्य-साहित्य में सामाजिक चेतना

साहित्य समाज का वैचारिकी का निर्माण करता है। समाज साहित्य से विच्छिन्न होकर जी नहीं सकता। समाज का प्रतिबिम्ब साहित्य में दिखाई देता है और साहित्य से समाज प्रभावित होता है। ''साहित्य और समाज का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। एक ओर साहित्य समाज परिष्कार का कार्य सम्पन्न करता है, तो दूसरी ओर समाज की प्रत्येक स्थिति साहित्यिक विचारधारा के प्रादुर्भाव का कारण बनती है।'' साहित्य तत्कालीन समाज की नब्ज को पहचानकर उसमें चेतना भर देने का काम करता है।[1]

साहित्यकार के अमरत्व की महानता का प्रतिबिम्ब ही साहित्य का औदात्य है। सच्चा वाग्वैदग्ध्य उन्हीं में पाया जा सकता है जिनकी चेतना के व्यापक और उद्धार हो। जो लोग जीवन भर क्षुद्र उद्देश्यों और संकीर्ण स्वार्थों के पीछे पड़े रहते हैं वे मानवता के लिए स्थायी महत्व की रचना नहीं दे पाते। यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि जिनके मस्तिष्क महान विचारों से परिपूर्ण होते हैं, उन्हीं की वाणी से उदात्त शब्द झंकृत होते हैं।[2] जहाज का काम है खुले पानी पर चलना, एक बन्दरगाह से दूसरी बन्दरगाह तक जाना। इसी तरह कोई भी साहित्यकार चाहे वह कवि हो या गद्य-लेखक अपने साहित्य में सामग्री और शैली के प्रयोगों में यातायात का प्रयोग करता रहे, यह वांच्छनीय है। इससे उसे समय समय पर नई दिशा प्राप्त हो सकती है और सच पूछा जाय तो सौ दिशाओं की एक दिशा है सामाजिक चेतना। यह न हो तो साहित्य का रंग नहीं जमता।[3]

रचना की सार्थकता का प्रश्न सामाजिक चेतना से गहरे रूप से जुड़ा होता है, क्योंकि ईमानदार लेखक अपने सांस्कृतिक दायित्व से बचकर नहीं निकलना चाहेगा। कुछ ऐसे भी, जो लेखन की स्वतंत्र सत्ता की माँग को बेहद खींचते हुए, जीवन की धार

से धीरे–धीरे कट जाते हैं। पर रचना की सही सामाजिक चेतना उसकी सार्थकता का सबसे जीवंत प्रमाण है और इससे रचनाकार की सर्जनात्मक शक्ति का अनुमान लगाया जा सकता है।[4]

गद्य कवीनां निकषं वदन्ति' इस संस्कृतोक्ति के अनुसार गद्य कवियों की योग्यता परखने की कसौटी मानी गई है। सुश्री महादेवी वर्मा जिन्हें अधिकांशतः एक अप्रतिम प्रतिभा मंडित कवयित्री के रूप में जाना जाता है उसका श्रेय उनके उत्कृष्ट गद्य लेखन को है। कविता में जिस सामाजिक तत्व की कमी आधुनिक युग के पाठक को खटकती है वह महादेवी जी के गद्य में चरमोत्कर्ष पर विद्यमान है। काव्य में वे केवल निजी सुख दुःख की चर्चा करती हैं और गद्य में समाज के शोषण और उत्पीड़न के लिए सोचने में व्यस्त रहती है।[5]

अमृतराय ने लिखा है – महादेवी का गद्य साहित्य मूलतः समाज केन्द्रिय है। उसने जनता के पीड़ित जीवन को स्वर दिया है। उसने समाज के दुख दैन्य, उसके स्वार्थों और अभिशापों का प्रतिकार किया उसमें एक विद्रोह की आत्मा रुदन कर रही है। उसका मूल उत्स अपनी पीड़ा में नहीं, समाज में दिन–रात चलने वाले अन्यायों और अत्याचारों में है।[6]

महादेवी जी ने समाज में व्याप्त अन्याय–अत्याचार, शोषण–दोहन, सामाजिक कुरीतियों आदि पर अपनी लेखनी के माध्यम से समाज की बुराइयों को इंगित किया है और सामाजिक समस्याओं का चित्रण कर सशक्त रचनाओं में समस्याओं के समाधान का संकेत .भी है।

वर्ग संघर्ष एवं मानवीय चेतना

वर्ग समस्या : महादेवी जी का अध्ययन समाज, परिवार के प्रति अत्यंत व्यापक था। महादेवी जी के गद्य साहित्य में तत्कालीन समाज का चित्रण पात्रों के माध्यम से अंकित हुआ है। उनकी गद्य कृतियों में तत्कालीन समाज के सभी वर्गों का चित्रण हुआ है। महादेवी जी ने किसी वर्ग, जाति विशेष को दृष्टिपथ में रखकर, उसका चित्रण नहीं किया, हाँ निम्न वर्ग का चित्रण अधिक अवश्य किया है। साथ ही व्यक्तियों में जो संवेदनशून्यता, कलह ईर्ष्या–द्वेष अभाव ग्रस्तता है उसका चित्रण भी किया है।

उच्च वर्ग : महादेवी जी ने उच्चवर्ग का चित्रण परिवार के माध्यम से किया है। अतीत के चलचित्र, 'स्मृति की रेखाएं', श्रेष्ठ उदाहरण हैं। उच्चवर्गीय परिवारों का चित्रण कर महादेवी जी ने यह बताया है कि इन परिवारों के व्यक्तियों में संवेदन शून्यता अधिक होती है, भावुकता, सहानुभूति के लिए कोई स्थान नहीं होता द्वेष–ईर्ष्या भी एक–दूसरे के लिए अधिक होता है। सम्पत्ति के लिए भाई–भाई का शत्रु बन जाता है।

'सबिया' निम्न वर्ग की हरिजन जाति की ईमानदार स्त्री है। सबिया का पति मैकू एक चरित्रहीन व्यक्ति है। पत्नी के घर में होते हुए भी वह अपने जातिभाई की पत्नी गेंदा को अपने घर ले आता है। एक दिन पत्नी को घर में छोड़कर गेंदा के साथ मेला देखने जाता है। इतने पर भी सबिया की सहनशीलता कि वह अपने पति की इन करतूतों को नज़रंदाज कर पति और गेंदा को अपने जीवन का एक अंग मानकर जी रही है। मैकू और गेंदा को मेले से पुलिस किसी बंगले में चोरी हो जाने के कारण जेल ले जाती है। सबिया को यह खबर मिलते ही वह परेशान हो जाती है। सबिया को जरा भी द्वेष या क्रोध नहीं भले ही पति का जो भी व्यवहार हो बल्कि वह उसकी पीड़ा सहन नहीं कर सकी और परेशानी के निवारण के लिए लेखिका के पास जाती है और लेखिका सबिया की परेशानी का समाधान भी करती है। लेखिका के शब्दों में, तभी पास के बँगले में चोरी हो गई। ऐसी स्थिति में दूसरों के अपहृत धन से साहूकार बने हुए बड़े आदमी अपने नौकर-चाकर ही नहीं, आस-पास के दरिद्रों को भी कैसे-कैसे पशुओं के हाथ सौंप देते हैं, यह कौन नहीं जानता! उनको चाहे धन में से एक कौड़ी भी वापिस न मिले, पर अपने विक्षिप्त क्रोध में वे इन दरिद्रों के जीवन की बची-खुची लज्जा को भी तार-तार करके फैंके बिना नहीं रहते।[7]

हमारी सामाजिक व्यवस्था इतनी विकृत और जटिल हो गयी है कि इसमें एक के अपराध के लिए दूसरे को दण्ड देना न्याय संगत समझा जाने लगा है। बड़े लोग तरह-तरह के उपायों से दूसरों के धन को हड़प जाते हैं, परन्तु उन्हें कोई भी चोर नहीं कहता लेकिन यदि कोई गरीब किसी की चीज चुरा लेता है तो सारा समाज एक स्वर से उसे चोर घोषित कर उसे दण्ड देने के लिए व्याकुल हो उठता है। आर्थिक सम्पन्नता का दूसरा नाम चोरी है। बिना दूसरों का धन चुराये कोई भी अमीर नहीं बन सकता। इसी कारण जब लेखिका से एक परिचित वकील-पत्नी ने उनसे कहा था कि 'आप चोरों की औरतों को क्यों नौकर रख लेती हैं ? तो उन्होने जो उत्तर दिया था वह इस प्रकार है - ''यदि दूसरे के धन को किसी न किसी प्रकार अपना बना लेने नाम चोरी है तो मैं जानना चाहती हूँ कि हममें से कौन सम्पन्न महिला चोर-पत्नी नहीं कही जा सकती?''[8]

महादेवी जी के इन कथनों से उच्चवर्ग के विकृत जटिल व्यक्तियों की मानसिकता पर बड़ी गहरी चोट हुई।

'बिट्टो' बाल-विधवा है। वह अपने भाई-भाभियों के साथ रहती है। भाभियों ने घर के नौकर चाकर निकाल दिये हैं बिट्टो ही घर का सारा काम-काज करती है इतने में भी भाभियाँ उस पर नित्य नवीन शारीरिक और मानसिक अत्याचार करती और कहती

– ''उसके भाई सतयुग के हैं, नहीं तो कौन एक निठल्ले व्यक्ति को घर बैठे–बैठे खिला सकता है।

महादेवी लिखती हैं ''यह स्वर तो उसके लिए एकदम नया था। वह समझ ही न पाती कि जिस घर में उसका जन्म और पालन हुआ है, उसी में यदि रात–दिन काम करके अपने ही सहोदरों से उसे भोजन वस्त्र मिल जाता है, तो कृतज्ञता के समुद्र में क्यों डूब जाना चाहिए।''[9]

बिट्टो भाई–भाभियों के साथ अपना वैधव्य जीवन जी लेना चाहती थी। लेकिन भाभियों को कहीं यह डर था कि उसे जमीन–जायदाद में से हिस्सा न बाँट देना पड़े इसी वजह से उसका पुनर्विवाह करवा देती है।

जिस घर में नौकर–चाकर को भोजन वस्त्र मिल सकता है वहाँ बिट्टो के लिए स्थान क्यों नहीं?

एक स्त्री दूसरी स्त्री के अधिकारों को कितनी आसानी से दबोच लेना चाहती है। यहाँ उच्चवर्ग की स्त्रियों की मानसिकता को महादेवी जी ने स्पष्ट किया है।

इसी तरह 'लछमा' संस्मरणात्मक रेखाचित्र में लछमा का विवाह एक बहुत सम्पन्न परिवार में हुआ। लछमा का पति पागल तो नहीं लेकिन मानसिक विकास अधिक नहीं हो सका था।

घर के सदस्यों जो धन लोलूपता से युक्त संवेदनशून्य थे वे पागल भाई को सम्पत्ति में से हिस्सा नहीं देना चाहते थे, इसी कारण लछमा अपने पति और उसके अधिकार को छोड़ना नहीं चाहती थी। एक दिन संवेदन शून्य धन लोलूपता से यूक्त जेठ ने क्रूरता का ऐसा ताण्डव दिखाया और लछमा को इतना अधिक पीटा कि वह बेहोश हो गई उसे मरा हुआ समझकर खड्डे में छिपा दिया।

धन के लोलूप भाइयों ने पागल भाई की सम्पत्ति को अपनाने के लिए उसकी पत्नी की हत्या करने का पूरा प्रयास कर डाला।

समृति की रेखाएँ 'भक्तिन' संस्मरणात्मक रेखाचित्र में भक्तिन (लक्ष्मी) का विवाह सम्पन्न परिवारम में हुआ। सास और जिठानियों का स्वभाव ईर्ष्यालू और छल–कपट से युक्त होने के कारण भक्तिन उनके व्यवहार से तंग होकर, पति से कहकर, घर की सम्पत्ति का बँटवारा करवा लेती है।

पति और तीनों बेटियों के साथ भक्तिन सुख से रहती है। बड़ी बेटी का विवाह करके भक्तिन का पति उसे छोड़ कर परलोक चला जाता है।

पति का देहान्त हो जाने के बाद तीन बेटियों का भार उस पर आ पड़ा। दूसरी

ओर जेठ जिठानियों ने भक्तिन (लक्ष्मी) की भूमि हड़पने के लिए उसे दूसरा घर करने के लिए दबाव डालने लगे, लेकिन लक्ष्मी उनके चकमे में नहीं आयी। न पुनर्विवाह किया, न जन जमीन जायदाद में से किसी को कुछ दिया। इतना ही नहीं, छोटी बेटियों का विवाह करा दिया और बड़े दामाद को घर जमाई बना लिया। लेकिन लक्ष्मी का दुर्भाग्य कि बड़े दामाद का देहान्त हो गया और बेटी विधवा लक्ष्मी की सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए बड़े जेठ ने साले को बुला लिया जो निठल्ला तितर उड़ाने वाला है। उसके साथ लक्ष्मी की बेटी का विवाह कराना चाह लेकिन लक्ष्मी को स्वीकार न था।

तब जेठ-जिठानियों ने कूटनीति अपनाकर छल-कपट करके भक्तिन के घर में न रहने पर उसकी बेटी की कोठरी में उस निठल्ले, तीतर उड़ाने वाले लड़कों को चढ़ा-सिखा कर चुपचाप अन्दर भेज दिया। लड़की ने विरोध भी किया तमाचों से खूब पीटा और कुण्डी खोल बाहर आ गयी। लेकिन जेठ-जिठानियाँ अपनी कूटनीति में सफल हो गये। पंचायत बैठी। पंच पहले ही जेठ ने साधे हुए थे। उन्होंने निर्णय दिया कि दोनों एक कोठरी से बाहर निकले हैं इसलिए दुराचार के दोषी हैं और प्रायश्चित यहीं है कि इन्हें पति-पत्नी की भांति रहना पड़ेगा।

भक्तिन (लक्ष्मी) को निकम्मा दामाद स्वीकार करना पड़ा। महादेवी जी लिखती हैं, 'दामाद अब निश्चिन्त होकर तीतर लड़ाता था और बेटी विवश क्रोध में जलती रहती थी। इतने यत्न से सँभाले हुए गाय-ढोर, खेती-बारी सब पारिवारिक द्वेष में झुलस गए।''[10]

भक्तिन के जेठ-जिठानियों की इस कूटनीति के परिचय से यह स्पष्ट होता है कि उच्चवर्गीय परिवारों में धन-सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए मनुष्य कितनी हीन-से हीन हरकत कर सकता है।

महादेवी जी ने अपने गद्य कृतियों में, उच्चवर्ग परिवार का चित्रण करते हुए पात्रों के चरित्र में ईर्ष्य-द्वेष, कूटनीति एवं कृत्रिम व्यवहार, को स्पष्ट करते हुए उनमें रही, संवेदन शून्यता का भी परिचय दिया है।

मध्यमवर्ग : महादेवी जी ने मध्यमवर्ग की आर्थिक समस्याओं अभाव ग्रस्तता का चित्रण कर उनमें रही संवेदना, सहानुभूति का भी स्पष्टिकरण पात्रों के माध्यम से किया है।

'अतीत के चलचित्र', 'अभागी स्त्री' रेखाचित्र में अभागी स्त्री का पति डेढ़ वर्ष से बीमार चल रहा है। आवश्यकताएं पुरी नहीं हो पा रही।

मध्मवर्ग की स्त्रियों से आर्थिक तौर पर कोई सहयोग नहीं लिया जाता था। परिवार में आर्थिक बोझ उठाने वाला पुरुष यदि बीमार हो जाये तो, मजबूरन स्त्री को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ता।

'अभागी स्त्री' के पति की लम्बी बीमारी के कारण दवा–दारू में सब कुछ खत्म हो चुका है गहने भी बेच डाले उँगली में चार मासे भर सोने का एक छल्ला बचा है। महादेवी जी लिखती हैं ''पति का एकमात्र उपहार होने के कारण इसे बेचने का विचार ही उसे कलान्त कर देता है।[11]

अभागी स्त्री पतिता माँ से कोई सम्बन्ध रखना तो दूर उनके रुपये लेने से मृत्यु को अच्छा मानती है। बीमार पति अपने घर जाने को राजी नहीं है पत्नी को छोड़कर। 'अभागी स्त्री' काम की खोज कर रही है। पति–पत्नी अपने स्वाभिमान को त्याग नहीं सकते, आर्थिक समस्या का सामना कर भूखे मर जाना स्वीकार है।

'अलोपी' संस्मरणात्मक रेखाचित्र में महादेवी जी ने मध्यम वर्ग की आर्थिक परेशानी को स्पष्ट किया है तो दूसरी ओर आज के मध्यम परिवार की युवा पीढ़ी को बहुत कुछ अंधे अलोपी के माध्यम से कह दिया है।

आज के युग में माता–पिता के आँसू पीनेवाले और परिश्रम करने वाली पत्नी के पैसे से आनंद लूटनेवाले पुरुषों की कमी नहीं है। वहाँ अलोपी बूढ़ी माँ पर बोझ नहीं बनना चाहता। लेखिका से काम मांगकर फूफेरे भाई रग्घू के साथ छात्रावास की छात्राओं के लिए देहात से सस्ती और अच्छी तरकारियाँ लाने का काम करता है।

महादेवी कहती हैं – 'चाहे मूसलाधार वर्षा हो या तूफानी हवा, बादलों की गर्जना या फिर शीत की सर्दी बदलू नीले नाखून और ऐंठी उंगलियाँ वाले पैरों को तोल–तोलकर रखता हुआ आता। ग्रीष्म में जब धूल ऐसी जान पड़ती, मानो कोई पृथ्वी को पीस–पीसकर उड़ाये दे रहा है और लू जलते हुए व्यक्ति की तरह चीत्कार करती हुई, इस कोने से उस कोने में दौड़ती फिरती, तब अलोपी पलकें मूँदकर आँखों के अन्धकार को भीतर ही बन्दी बनाता हुआ अपने हर पग को इतनी धीरता से जलती धरती पर रखता था, मानो उसके हृदय की ताप नापता हो। बसन्त हो या होली, दशहरा हो या दीवाली, अलोपी के नियम में कोई व्यति क्रम कभी नहीं देखा गया।[13]

इतना ही नहीं दंगे के समय भी जान की परवाह किये बिना तरकारियाँ पहुँचाता है। अंधा अलोपी परिश्रम करके रोटी की समस्या सुलझा सकता है तो देश में दो आखोंवाले अलोपी क्या कुछ नहीं कर सके ? देश का युवाधन अंधा अलोपी की तरह परिश्रम करेगा तो देश कभी गरीबी की कगार पर खड़ा नहीं रहेगा।

'अतीत के चलचित्र' में ''भाभी'' संस्मरणात्मक रेखाचित्र की भाभी जो मारवाड़ी सेठ के इकलोते बेटे की विधवा है। विवाह के एक साल बाद पति बिना बीमारी के ही मर गया और भाभी विधवा के नाम से कलंकित हो गई।

विधवा भाभी वृद्ध ससुर की सेवा करती है। ''वृद्ध ससुर एक समय भोजन करते

और वह तो विधवा ठहरी दूसरे समय भोजन करना ही यह प्रमाणित कर देने के लिए पर्याप्त था कि उसका मन विधवा के संयम-प्रधान जीवन से ऊबकर किसी विपरीत दिशा में जा रहा है।[15]

इतना ही नहीं उस विधवा बहू को रंगीन वस्त्र वर्जित थे। जैसे हमारे हिन्दू धर्म का संपूर्ण अस्तित्व ही उस विधवा के सतीत्व पर टिका हो।

वृद्ध सेठ की सौभाग्यवती पुत्री अपने नैहर आती ही थी, विधवा भाभी को शारीरिक एवं मानसिक यातनाएं देने, जैसे उसका प्राप्त ही उसे देकर जा रही है।

एक स्त्री दूसरी स्त्री के साथ सहानुभूति का व्यवहार क्यों नहीं करती ? उसे जीने का अधिकार क्यों नहीं दिलाती। आज भी मध्यमवर्गीय परिवार में विधवा स्त्री की दशा शोचनीय स्थिति में है। उनका जीवन अनेकों कुप्रथाओं की चक्की में पिस रहा है और रिती-रिवाजों का बोझ ढो रहा है।

मध्यमवर्गीय परिवार अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति बड़ी कठिनाई से पूरी करता है। और कभी-कभी तो आर्थिक समस्या के बोझ तले दब कर ही अपना जीवन बिता देता है। मध्यमवर्गीय परिवारों में नारी की स्थिति बड़ी दयनीय होती है उनका जीवन अनेकों कुप्रथाओं से ग्रस्त होता है।

महादेवी जी ने इस वर्ग के प्रति भी सहानुभूति रख अपनी लेखनी चलाई।

निम्न वर्ग : महादेवी जी के संस्मरण संग्रह एवं रेखाचित्र में, निम्नवर्गीय परिवारों का चित्रण मिलता है। इसका यह भी कारण रहा है कि महादेवी जी ने ग्रामीण जीवन की समस्याओं को बड़े निकट से उनके बीच जाकर देखा और जीया है। इसी वजह से निम्न वर्गीय परिवार का यथार्थ सजीव चित्रण इतनी गहराई से कर पाई है।

अतीत के चलचित्र, संस्मरणात्मक रेखाचित्र 'सबिया' में पति मैकू उसे सौरी में थी तभी छोड़कर अपने जाति भाई की पत्नी को लेकर भाग जाता है। सबिया पर दो बच्चों एवं अंधी सास का भार आ जाता है। वह लोगों के यहाँ झाड़ू लगाने का काम करती, जो मिल जाता उतने में ही अपने, बच्चों का एवं सास का पालन-पोषण करती है।

'घीसा' रेखाचित्र में घीसा के बाप की मृत्यु के छः महीने बाद घीसा का जन्म होता है। घर में और कोई न होने के कारण 'घीसा' को उसकी माँ बन्दरिया के बच्चे के समान अपने सीने से लगाये लोगों के घर लीपने-पोतने का कार्य करती और कभी-कभार मजदूरी भी पा जाती तो कर लेती, इसी प्रकार अपने बच्चे घीसा और अपना गुजर-बसर करती।

'बदलू' रेखाचित्र में बदलू जाति का कुम्हार है, पत्नी रधिया जो पति के साथ

जन्म–जात व्यवसाय में हाथ बँटाकर जीविका की समस्या को हल करने में लगी रहती। जीविका की समस्या हल न होते देख, आस–पास के खेतों में काम कर लेती ताकि उसके पाँचों बच्चे भूखे न रहें। इतना ही नहीं रधिया ने बच्चे को जन्म दिया उस समय एक रुपया न होने के कारण उसे फिजूलखर्च समझकर चमारिन को नाल काटले के लिए न बुलाया पीड़ा को सहन करते हुए लेटे–लेटे दराती से नाल काट लिया।[16]

महादेवी जी ने बड़े मार्मिक सहानुभूतिपूर्ण ढंग से अभावग्रस्तता परिवार का चित्रण किया है।

'लछमा' संस्मरणात्मक रेखाचित्र में लछमा परिवार का जीवन यापन जैसे–तैसे करती है। कारण ''बाप की आँखें खराब हैं, माँ का हाथ टूट गया है और भतीजी–भतीजे की माता पर लोकवासिनी और पिता विरक्त हो चुका है। सारांश यह कि लछमा के अतिरिक्त और कोई व्यक्ति इतना स्वस्थ नहीं, जो इन प्राणियों की जीविका की चिन्ता कर सके। पर्वत की कन्या इस निर्जन में कौन–सा काम करके इतने व्यक्तियों को जीवित रखे, ये समस्या कभी हल नहीं हो पाती। एक भैंस है। लछमा उसके लिए घास और पत्तियाँ लाती है। दूध दुहती, दही जमाती और मट्ठा बिलोती है। गर्मियों में झोपड़े के आस–पास कुछ आलू भी बो लेती है, पर इससे अन्न का अभाव तो दूर नहीं होता। वस्त्र की समस्या तो नहीं सुलझती।

महादेवी जी के शब्दों में 'लछमा की जीवन–गाथा उसके आँसुओं में भीग–भीगकर अब इतनी भारी हो गई है कि कोई अथक कथावाचक और अचल श्रोता भी उसका भार वहन करने को प्रस्तुत नहीं।''[17]

'स्मृति की रेखाएँ', 'जंग बहादुर' संस्मरणात्मक रेखाचित्र में महादेवी जी की केदारनाथ से बद्रिकाश्रम तक की यात्रा में उनका सामान ढोने वाले दो नेपाली भाई हैं। पहला जंग बहादुर दूसरा धनसिंह ये दोनों भाई नेपाल देश छोड़कर गढ़वाल के दुर्गम स्थानों में केवल एक रुपया प्रतिदिन की मजदूरी पर भारी–भारी बोझ अपनी पीठ पर उठाते थे। महादेवी जी ने उनके माध्यम से मजदूरों के शोषण की कथा सुनी और इस पहाड़ी यात्रा के दौरान पहाड़ी कुली की स्थिति भी देखी।

महादेवी लिखती हैं, ''यात्री एक रुपया प्रतिदिन देकर कुली को खरीदता है, इसलिए लाभ की दृष्टि से तीन दिन का रास्ता एक दिन में तय करने की इच्छा स्वाभाविक है, अन्यथा वह घाटे में रहेगा।

यात्री तो बैठा–बैठा ऊँघता रहता है; पकवान सूखे मेवे आदि उसके साथ होते हैं, अतः अधिक थकावट या अधिक भूख का प्रश्न ही नहीं उठाता; पर वह कुलियों के विश्राम और भोजन के समय में से घटाता रहता है। सबेरे ही कह देता है कि बीस

मील रास्ता तय करना होगा। चाहे जिस तरह चलो; पर शाम तक इतना न चलने पर मजदूरी काट ली जायेगी और वे बेचारे मनुष्य–पशु, हाँफ–हाँफकर मुँह से फिचकुर निकालते हुए दौड़ते हैं।''[18]

ऐसे यात्री अपने स्वार्थ वश मुनाफाखोरी कर निम्न वर्ग का खून चूसने में कोई कमी नहीं रखते। इसी कारण श्रमिक वर्ग दिन प्रतिदिन गरीब होता जा रहा है और पूँजीपति दिन प्रतिदिन सेठ बनता जा रहा है।

'मुन्नू' संस्मरणात्मक रेखाचित्र में 'मुन्नू' एक ब्राह्मण पिता का पुत्र है। पिता का नाम हथई है, उसमें ब्राह्मणों वाले कोई लक्षण नहीं थे, यह कहना उचिन ही है। हथई नशेड़ी, जुआरी दोनों है। उसका पिता परिश्रमी बहू पाके अब और भी ''निश्चिन्तता के साथ टूटी खटिया पर लेटकर बहू को सेवापरायणा होने का महत्व समझाता रहता है। 'अपनी करनी अपनी भरनी' पर अटल विश्वास होने के कारण वह लड़के को कुछ न कहकर बहू को सती और सुगृहिणी बनकर स्वर्गलोक में राजरानी होने का उपदेश देता रहता है।

बूढ़े के विचार में जीना दो दिन का है, पर मरने की कोई सीमा नहीं। यदि दो दिन मिट्टी के बिल–जैसे घर में रहकर, किसी चक्की में चना–जौ पीसकर और रेंड के धुएँ से धुँआई रोटी ससुर और उसके निठल्ले लड़के को खिलाकर, वह मरने के उपरान्त स्वर्ग की रानी होने का अधिकार प्राप्त कर लेती है, तो वहीं लाभ में रही। दो दिन का कष्ट और उसके बदले में अनन्त काल के लिए स्वर्ग–सुख! भला कौन भकुआ ऐसा होगा जो उस सौदे को सस्ता न समझे। संसार में असंख्य व्यक्तियों की पैनी दृष्टि इस परोक्ष सौदे में छिपे सूक्ष्म लाभ को प्रत्यक्ष देख लेती है, इसी से जान पड़ता है कि संसार में मूर्खों की संख्या बहुत कम है।[19]

महादेवी जी ने निम्न वर्ग के व्यक्तियों को मेहनतकश बताया है और उनके साथ हो रहे शोषण को भी उजागर किया है तो दूसरी ओर निम्न वर्ग के व्यक्तियों की निठल्ली सोच, कर्म से जी चूराते व्यक्तियों पर व्यंग भी किया है।

महादेवी जी ने अपने पात्रों के माध्यम से उच्च, मध्य तथा निम्न वर्गो का चित्रण कर समस्याओं पर प्रकाश डाला है एवं समाधान की ओर संकेत भी किया है।

पारिवारिक समस्याएँ : परिवार के बिना सामाजिक जीवन न के बराबर होता है। परिवार हमारे सामाजिक जीवन का प्रमुख आधार है और पारिवारिक जीवन का मुख्य स्तम्भ पति–पत्नी होते हैं। पति–पत्नी के आपसी प्रेम–स्नेह और सदभावना से ही पारिवारिक जीवन में सुख,शान्ति का संचार होता है।

''यह कहने में कोई अत्युक्ति न होगी कि समाज रूपी विशाल भवन की नींव में

'भाइयों' के लिए लाभप्रद ही ठहरा, क्योंकि कोई भी कला–सांसारिक और विशेषतः व्यावसायिक बुद्धि को पनपने ही नहीं दे सकती और बिना इस बुद्धि के मनुष्य अपने आपको हानि पहुँचा सकता है, दूसरों को नहीं।[22]

बड़े भाईयों ने ठकुरी का विवाह नहीं करवाया था। जात–बिरादरी में टीका–टिप्पणी होने लगी, तब जाके भाइयों ने ठकुरी का विवाह करवाया और नई बहू के आते ही भौजाइयों ने देवरानी को सेवाधर्म की शिक्षा देनी शुरु कर दी। ठकुरी और उसकी पत्नी दोनों मिलकर बड़े भाइयों, भोजाइयों की सेवा में जुटे रहते। दम्पति सुखी न रहे इसी से भौजाइयों ने नई बहू की चुगली देवर ठकुरी से करने लगी। लेकिन ठकुरी न अपनी पत्नी पर विश्वास करता न अविश्वास। इस तरह कुछ वर्षों तक ठकुरी और उसकी पत्नी ने संयुक्त परिवार के सदस्यों की सेवा में समय बिताए और फिर ठकुरी को एक कन्या उपहार देकर पत्नी प्रसूति ज्वर से पीड़ित हुई। संयुक्त परिवार के स्वार्थी सदस्यों ने उसकी ओर ध्यान न दिया और उचित चिकित्सा के अभाव के कारण उसकी मृत्यु हो गई। संयुक्त परिवार में कमजोर जीवों पर कभी–कभी इतने अत्याचार होता है कि वे समय से पहले ही मर जाते हैं।

महादेवीजी लिखती हैं कि ठकुरी के यौवन के प्रथम प्रहार में सारे स्नेह बन्धन तोड़ जाने वाली पत्नी ने ठकुरी के हृदय को हिला दिया।

पत्नी को खोकर ही ठकुरी सही मायने में पति और पिता बन सके। घर में उस बालिका की उपेक्षा देखकर और उसके परिणाम की कल्पना करके वे अलगौझे पर बाध्य हुए।[23]

जहाँ संयुक्त परिवार के सदस्य अपना स्वार्थ साधते हैं। अपने से छोटे सदस्यों से नौकरों की तरह काम भी लेते हैं और उनके बच्चों से कोई स्नेह प्रेम या सहानुभूति भी नहीं रखते हैं। ऐसे संयुक्त परिवार में समस्याएँ उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। जहाँ परिवार के सदस्यों में पारस्परिक कलह शुरू हो गई वहाँ सीधे–साधे न समझ बच्चों के लिए भी बड़ों के मन में कटुता, ईर्ष्या आना उन स्वार्थी व्यक्तियों के मन में सामान्य बात हो जाती है। ऐसे परिवार के कुछ व्यक्तियों से परेशान होकर परिवार के कुछ व्यक्ति को अलगौझे पर बाध्य होना ही पड़ता है।

'अतीत के चलचित्र' की 'लछमा' रेखाचित्र में लछमा का विवाह एक बहुत ही सम्पन्न परिवार में हुआ। लछमा का पति पागल तो नहीं था। पर उसका मानसिक विकास एक बालक के विकास से अधिक नहीं हो सका। ऐसे पति के साथ लछमा खुश थी या नहीं यह नहीं कह सकते लेकिन लछमा जैसी परिश्रमी बहू से परिवार के स्दस्य कैसे खुश रहते? लछमा देवर–जेठ के लिए एक समस्या ही हो सकती है। क्योंकि उसके

रहने से पागल भाई को भी सम्पत्ति में हिस्सा देना पड़ेगा। इसी कारण धन लोलुप परिवार के सदस्य नई बहु पर अनेकों अत्याचार करते ताकी वह अपना अधिकार छोड़कर चली जाय।

लेकिन लछमा उनके सारे अत्याचार को सहकर भी परिश्रम कर अपना अधिकार नहीं छोड़ना चाहती थी। तब घर के स्वार्थी व्यक्तियों ने क्रूरता का ताण्डव दिखाया। उसे इतना अधिक पीटा कि वह बेहोश हो गई उसे मरा हुआ समझकर खड्डे में छिपा दिया।

संयुक्त परिवार में कभी–कभी इतना क्रूर व्यवहार, होता है, कि परिवार के सीधे–सादे जीव अपना अधिकार छोड़कर अलग चले जाय यदि नहीं जाते तब धन लोलुपता से युक्त परिवार के सदस्य स्वार्थ में अन्धे होकर अमानवीय व्यवहार कर बैठते हैं। इनका शिकार स्त्री अधिक होती हैं। संयुक्त परिवार में सबसे ज्यादा शोषण नारी का होता है। यह बात ठकुरी की पत्नी और लछमा से स्पष्ट किया है, महादेवी जी ने।

आज संयुक्त परिवार का विघटन तेजी से हो रहा है। यदि परिवार में किसी स्त्री का पति ज्यादा अर्थोपार्जन कर रहा है खर्चा कम है, और परिवार में किसी स्त्री का पति कम उपार्जन कर रहा है और सदस्य ज्यादा है, तब उस कमऊ पति की पत्नी के नखरे पाश्चात्य सभ्यता की नारी से चार कदम आगे निकल जाते हैं। अपने आपको मालकिन समझती है। ईर्ष्या, द्वेष की भावना रखती है। आज सास–बहू, देवरानी, जिठानी, ननद–भाभी के संबंधों में भी टकराहट हो रहा है। जायदाद को लेकर पिता–पुत्र चाचा–भतीजे, भाई–भाई में भी संघर्ष हो रहा है। फिर परिणाम अलगौझ होना।

आज व्यक्ति का व्यक्तित्व अत्यंत स्वार्थी, धन लोलुप और ईर्ष्यालू हो गया है। जिसके चलते संयुक्त परिवार का विघटन तेजी से हो रहा है। आज के युग में हर वर्ग में संयुक्त परिवार का विघटन तीव्रता से हो रहा है।

दाम्पत्य–जीवन : दाम्पत्य जीवन को सुखी या दुःखी बनाने में पति–पत्नी के सम्बन्ध विशेष महत्व रखते हैं। यदि पति–पत्नी में परस्पर प्रेम, स्नेह, विश्वास और सहयोग की भावना हो तब दाम्पत्य जीवन सुखी बनता है। जहाँ दाम्पत्य जीवन में प्रेम, विश्वास और सहयोग इनमें से किसी की भी कमी आती है तो दाम्पत्य जीवन को दुखी बन न जाने के लिए काफी है।

महादेवी जी ने अपने संस्मरण में सुखी एवं दुखी दाम्पत्य संबंधों का क्या परिणाम आता है? उसका चित्रण किया है।

दाम्पत्य जीवन की कटुता : पारिवारिक जीवन को दुःखी या सुखी बनाने में दाम्पत्य जीवन महत्वपूर्ण रहा है। दाम्पत्य जीवन को दुःखी बनाने वाले ऐसे कई कारण हैं। अविश्वास, अशिक्षा, लंपटवृत्ति, ईर्ष्या, ऐय्याशी, उपेक्षा, अभिमान, स्वभावगत भिन्नता,

दाम्पत्य जीवन को दुःखी बनाते हैं। 'अतीत के चलचित्र' में 'रामा' रेखाचित्र में दाम्पत्य संबंधों का चित्रण किया है। रामा की पत्नी अशिक्षित एवं ईर्ष्यालू है वह रामा से किसी न किसी बात को लेकर प्रतिशोध लेती रहती है। रामा को समझ न आता वह अपना सारा समय और स्नेह कैसे उसके चरणों में रख दे, शांत रामा क्रोधित रहने लगा पत्नी से खिन्न भी एक दिन उसके क्रोध का अन्त हो गया, जब पत्नी रूठकर मायके चल दी। अपना कर्तव्य समझकर पत्नी को खुश रखने के लिए अपने गाँव चला जाता है। रामा की पत्नी में अशिक्षित और स्वभावगत भिन्नता थी जिस कारण वह रामा के साथ शहर में न रह सकी और गाँव चली गई।

कभी-कभी ऐसी स्त्रियों के कारण भी दाम्पत्य जीवन में कटुता आ जाती है।

स्त्री की अशिक्षा और स्वभावगत भिन्नता होने के कारण वे कहीं भी अपने आपको ढाल नहीं पाती।

परिणाम वह अपने दाम्पत्य जीवन को कटुता से भर देती हैं।

'अतीत के चलचित्र' की 'सबिया' जो नायिका है। सबिया का पति मैकू सबिया को सौरीमें थी तब छोड़कर अपने जाति भाई की पत्नी गेंदा को लेकर भाग जाता है। सबिया फिर भी पति के आने की आस रखती है और दो बच्चों अन्धी सास का भार लेकर दिन गुजारती है, मैकू आता भी है। लेकिन सबिया के लिए सौतन लेके, सबिया अपनी सौत को अपने घर में रखती है और अपने पति के सुख में ही अपना सुख समझती है। लेकिन मैकू सबिया से न कभी सुख-दुःख पूछता है न बच्चों की ओर देखता है। वह निरंतर सबिया और बच्चों की उपेक्षा करता है और छोटी-छोटी बातों पर गेंदा के चढ़ाने पर सबिया से लड़ता भी है। जिससे सबिया के हृदय को दुःख पहुँचता है। महादेवी जी लिखती हैं, ''सबिया का मन टूट गया, क्योंकि वह कभी नीम से सिर टिकाकर रो लेती है, और कभी झाड़ू देते-देते रुककर आँसू पोंछने लगती है।''[24]

महादेवी जी के शब्दों में ''पुरुष भी विचित्र है। वह अपने छोटे-से-छोटे सुख के लिए स्त्री को बड़ा-से-बड़ा दुःख दे डालता है और ऐसी निश्चिन्तता से, मानो वह स्त्री को उसका प्राप्त ही दे रहा है।[25]

पति-पत्नी के बीच कोई तीसरा व्यक्ति प्रवेश करता है तब दाम्पत्य संबंध दुःख, पीड़ा कटुतायुक्त हो जाता है।

'अतीत के चलचित्र' संस्मरण का 'अलोपी' रेखाचित्र में अलोपी आँख से अन्धा है। वह अपने फुफेरे भाई रग्घू के साथ गाँव से शाक-तरकारियाँ ले जाके शहेर में महादेवी जी को और छात्रावास की विद्यार्थिनियों को बेचता है। इस तरह वह महीने में 70 रु. तक कमा लेता था। कुछ समय बाद अलोपी ने काछिन से विवाह कर लिया।

पत्नी ने घर सँभाल लिया। पत्नी को ''रुपये की चर्चा के अतिरिक्त और कोई चर्चा नहीं सुहाती कभी वह जानना चाहती है कि अलोपी ने गाढ़े दिन के लिए कुछ बचा रखा है या नहीं, कभी पूछती है कि उसके पछेली और झुमके किस कोने में गाड़कर रख दिये जाएँ।[26]

अलोपी का दाम्पत्य जीवन सुखी तो नहीं हुआ। लेकिन असफल जरूर हो जाता है। उसका कारण अलोपी की पत्नी का लालची स्वभाव, आभूषण प्रियता और स्वार्थलिप्सा है जिस कारण पति से छल-कपट कर सब कुछ लेकर पलायन हो जाती है।

इस प्रकार महादेवी जी ने निम्न मध्यमवर्गीय परिवार की स्त्रियों की आभूषण-प्रियता, लालची स्वभाव और स्वार्थी वैयक्तित्व वाली स्त्रियों पर प्रकाश डाला है। जो विवाह तो करती है लेकिन दाम्पत्य जीवन को असफल बनाके दुःख, पीड़ा से भरने के लिए।

'स्मृति की रेखाएँ' के 'मुन्नू' रेखाचित्र में मुन्नू एक ब्राह्मण पिता का पुत्र है। पिता का नाम हथई है। उसमें ब्राह्मणों वाले कोई लक्षण नहीं थे यह कहना उचित ही है। हथई नसेड़ी, जुआरी दोनों है। इसी वजह से मुन्नू की माई को दूसरों के खेत खलिहान, घर आदि में कुछ-न-कुछ मजदूरी करके मिले अनाज से अपने बुढ़े ससुर, जुआरी पति और अपने छोटे से बेटे मुन्नू का पेट भरती है। उसी जगह हथई नशे, जुए में मस्त रहता है। ''मुन्नू की माई घर की सारी जरूरतों को पूरा करने में दिन-रात लगी रहती है।''

महादेवीजी के शब्दों में वह मधुर-भाषिणी सलज्ज और सेवा-परायण है; पर उस विजन में उसका जीवन जंगली फूल के समान ही उपेक्षा और अपरिचय के बीच में खिला है।[27] 'मुन्नु की माई ''नववधु से माता बन गई है। उसकी चिन्ता का विस्तार बढ़ते-बढ़ते अब सीमा तक पहुँच चुका है; पर स्वयं उसकी चिन्ता करने का प्रश्न अभी तक किसी के मन में नहीं उठा।[28] हथई जैसा नसेड़ी-जुआरी पति अपनी पत्नी का आर्थिक तौर पर शोषण करता है। हमारे समाज में ऐसे पुरुषों की कमी नहीं है जो अपने दाम्पत्य जीवन को कटु बनाकर पत्नी की मेहनत पर रोटी तोड़ते हैं। क्या ऐसे पुरुष अपना दाम्पत्य जीवन कभी सुखी बना सकते हैं?

'स्मृति की रेखाएं' की 'बिबिया' रेखाचित्र में बिबिया का विवाह रमई से होता है वह शराबी, जुआरी दोनों है। रमई का शराब के नशे में आना और बिबिया से लड़ाई-झगड़ा मार-पीट करना यह क्रम प्रतिदिन चलने लगा।

महादेवी जी लिखती हैं - शराबी होश में आने पर मनुष्य बन जाता है, पर जुआरी कभी होश में आता ही नहींअतः उसके सम्बन्ध में मनुष्य बनने का प्रश्न उठता ही

नहीं।

रमई पत्नी बिबिया को जुआ के दाँव में रखने वाला था यह समाचार बिबिया को मिल जाता है तब वह पति रमई और उसके साथी को कहती है – "ऐसी हरकत करने पर वह उन दोनों के पेट में चाकू भोंक देगी। फिर चाहे उसे कितना ही कठोर दण्ड क्यों न मिले; पर वह ऐसा करेगी अवश्य।"[29]

रमई जैसे पुरुष की न अपनी कोई इज्ज़त होती है न स्वाभिमान वह किस की रक्षा कैसे करेगा?

पुरुष स्त्री को उपभोग का साधन समझ उसे दासी बना उसकी उपेक्षा करता है। वह समझता है कि स्त्री उस पर आश्रित है। वह यह भूल गया है कि नारी भी अपनी स्वतंत्रता चाहने लगी है। अपने स्वाभिमान, इज्ज़त के लिए लड़ भी रही है।

बिबिया आज के आधुनिक युग की स्वतंत्रत जाग्रत नारी का श्रेष्ठ उदाहरण है। जो अपने स्वाभिमान, इज्ज़त की रक्षा के लिए समाज, परिवार से विद्रोह करती है। परिणाम की चिन्ता किये बिना। महादेवी जी ने दाम्पत्य जीवन को कटु बनाने के कारणों का भी चित्रण किया है, तो साथ ही आधुनिक युग की स्वतंत्र जागृत नारी के विद्रोह का भी चित्र किया है।

पति–पत्नी रथ के दो पहिये हैं, यदि दोनों के समन्वय में अस्थिरता आ जाए तो दाम्पत्य जीवन दुःख, पीड़ा से भर जाता है।

दाम्पत्य प्रेम की मधुरता : 'अतीत के चलचित्र' संस्मरण संग्रह में 'बदलू' रेखाचित्र बदलू जो जाति का कुम्भकार है और स्वभाव से मितभाषी, पत्नी रधिया जो परिश्रमी है और सादगी युक्त स्त्री है। वह पति बदलू के साथ "जन्म–जात व्यवसाय से जीविका की समस्या को हल करने में लगी रहती। जीविका की समस्या हल न होते देख रधिया आस–पास के खेतों में काम कर लेती ताकि उसके पाँचों बच्चे भूखे न रहें।

परिश्रमी रधिया अपने पति बदलू से कभी भी आभूषण की माँग नहीं करती। महादेवी जी के शब्दों में 'इस वर्ग की स्त्रियों में जो एक प्रकार की कर्कश प्रगल्भता मिलती है, उसका रधिया में सर्वथा अभाव रहा सम्भवतः इसी कारण मेरी उदासीनता का कुतूहल में और कुतूहल का सम्मान में रूपान्तरित होना अनिवार्य हो गया। बदलू के प्रति उसका स्नेह गंभीर और इसी से कोलाहल ही न था। न वह कभी घर की, बच्चों की और स्वयं उसकी चिन्ता करता देखा गया और न रधिया के मुख से उसके गोबर गणेश पति की निन्दा सुनने का किसी को सौभाग्य प्राप्त हो सका। रधिया को विश्वास था कि उसका पति कुम्भकार शिरोमणि और अच्छा कलावन्त है, केवल लोग उसकी महानता से परिचित नहीं।[30]

रधिया बच्चों को जन्म देने की वजह से कमजोर पड़ गयी थी। स्वयं भूखी रहती अपने बच्चों को भूखा न रहने देती और न कभी अपने चेहरे पर शिकन आने देती।

महादेवी जी का कथन ''सरल रधिया तो मानो अपने पति को कलावन्त बनाने के लिए ही जीवित थी। जैसे ही उसके बेडौल मटकों का स्थान सुन्दर मूर्तियों ने लिया, वैसे ही वह अपनी ममता समेटकर किसी अज्ञातलोक की ओर प्रस्थान कर गई।[31]

दाम्पत्य जीवन में एक-दूसरे के स्वाभिमान की रक्षा करते हुए। रधिया और बदलू परस्पर प्रेम, सहयोग के साथ हर मुसीबत का सामना कर अपने दाम्पत्य जीवन में मधुरता बनाए रखते हैं। तभी तो बदलू के हृदय में जो स्थान रधिया ने बनाया था वह अन्य स्त्री नहीं बना सकती, बदलू के ब्याह की बात करने आये माहाशय के सिर पर बदलू ने मटकी दे मारी थी।

महादेवी जी ने रधिया और बदलू दंपतियों का चित्रण किया है, जो आर्थिक अभावों के बीच रहकर भी अपने घर को स्वर्ग बनाकर दाम्पत्य जीवन को मधुरता से जीते थे।

आज के आधुनिक युग के पति-पत्नी को बदलू और रधिया बहुत कुछ कह जाते हैं। दाम्पत्य जीवन जीने वाले यह भूल गये हैं कि आधुनिक युग की भौतिक सुख-सुविधा से ऊपर भी एक दुनिया है जो प्रेम, स्नेह और मधुरता की है।

'स्मृति की रेखाएँ' की 'भक्तिन' रेखाचित्र में भक्तिन का नाम लक्ष्मी है। लक्ष्मी की तीन बेटियाँ हैं। जिसके कारण सास, जिठानियाँ बात-बात पर ताने देती हैं। लक्ष्मी के प्रति उपेक्षा प्रकट करती हैं।

''इस दण्ड विधान के भीतर कोई ऐसी धारा नहीं थी, जिसके अनुसार खोटे सिक्कों की टकसाल-जैसी पत्नी से पति को विरक्त किया जा सकता। सारी चुगली-चबाई की परिणति उसके पत्नी प्रेम को बढ़ाकर ही होती थी। जिठानियाँ बात-बात पर धमाधम पीटी-कूटी जातीं, पर उसके पति ने उसे कभी उँगली भी नहीं छुआई।''

लक्ष्मी का पति अपनी ''परिश्रमी, तेजस्विनी और पति के प्रति रोम-रोम से सच्ची पत्नी को वह चाहता भी बहुत रहा।''[32]

तभी तो भाभियों की चुगली-चबाई ने भी उनके दाम्पत्य सम्बन्धों में शंका, वहम को स्थान नहीं देने दिया था।

इस प्रकार महादेवी जी ने दाम्पत्य जीवन को कटु बनाने वाले कारणों का चित्रण किया है तो साथ ही इस समस्या का समाधान भी किया है।

विमाता का अत्याचार : बच्चों का पालन-पोषण माता-पिता दोनों मिलकर करते हैं। माता-पिता यदि अपनी जिम्मेवारी ठीक से नहीं निभाते तब बच्चों के भविष्य पर

एक प्रश्न चिन्ह लग जाता है। ऐसे में यदि परिवार में जब विमाता आ जाती है तब वह अपने ईर्ष्यालू स्वार्थी स्वभाव के कारण परिवार में अनेकों समस्याएँ उत्पन्न करती है। उसका शिकार सर्वप्रथम बच्चों को बनना पड़ता है। महादेवी जी ने अपने गद्य संग्रह में विमाता के अत्याचार का शिकार बने बच्चों का भी चित्रण किया है। 'अतीत के चलचित्र' संस्मरण संग्रह में 'रामा', रेखाचित्र जो विमाता के अत्याचार से बुन्देलखंड से इंदौर जा पहुँचा था। महादेवी जी की शैशव अवस्था में उनके यहाँ आया था, बालक 'रामा' को महादेवी जी की माता द्वारा आश्रय मिलता है और माता का प्रेम भी राम उनके यह रहने लगता है। आज भी समाज में रामा जैसे बच्चे जो विमाता के अत्याचार से घर छोड़कर भाग जाते हैं और प्रेम ढूँढ़ते हैं।

विमाता से बच्चों को वह स्नेह और प्यार नहीं मिलता जो उन्हें उनकी वास्तविक माँ से मिला होता है, यह कहना उचित ही होगा कि नई माँ के ईर्ष्या जन्य व्यवहार उसकी अयोग्यता से ही बच्चे घर छोड़ने पर मजबूर हो जाते हैं।

'बिन्दा' रेखाचित्र में बिन्दा जो महादेवी जी की बाल्यावस्था की बाल्य सखी है, वह भी विमाता के अत्याचारों से पीड़ित और शोषित भी हैं।

बिन्दा की माँ की मृत्यु के बाद उसके पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। नई विमाता के आते ही बिन्दा पर तरह-तरह के अत्याचार शुरू हो जाते हैं। विमाता स्वयं चारपाई पर सज सँवरकर बैठ कर बिन्दा को ऊँचे स्वर में गर्जना कती –'उठती है या आऊँ, बैल के से दीते क्या निकाल रही, मोहन का दूध कब गर्म होगा, अभागी मरती भी नहीं।[33]

विमाता के व्यवहार में इतनी कटुता, ईर्ष्या है जो शायद उस बाल्य बिन्दा के समझ के बाहर है। महादेवी का कथन ''मैली धोती लपेटे हुए बिन्दा आँगन से चौके तक फिरकनी सी नाचती दिखाई देती है। कभी झाडू लगाना, कभी आग जलाना, कभी आँगन के नल से कलसी में पानी लाना, कभी नयी अम्मा को दूध का कटोरा देने जाना।''[34]

खाने खेलने की उम्र में बिन्दा घर का पूरा काम करती साथ ही अपनी जन्म देने वाली माँ को याद करती रात के समय बिन्दी आकाश वासिनी माँ को उन चमकीले तारों में ढूँढ़ती।

बिन्दा को छोटे से छोटे अपराध का भी बहुत बड़ा दण्ड मिलता – 'गर्मी की दोपहर में आँगन की जलती धरती पर घंटों खड़े रखा जाता, चौके के खम्भे में दिन-दिन भर बाँधा पाया था और भूख से मुरझाये मुख के साथ पहरों नयी अम्मा और खटोले में सोते मोहन पर पंखा झलते देखा था। महादेवी जी ने आगे भी वर्णन किया है – 'उसे अपराध का ही नहीं, अपराध के अभाव का भी दण्ड सहना पड़ता था।'[35] एक बार

जब बिन्दा के पिता की थाली में काला–मोटा बाल निकला तब भी दण्ड बिन्दा को ही मिला उसके, उलझे, भूरे कोमल, छोटे बालों को उसकी विमाता ने कैंची से काट कर कूड़े के ढेर पर रख दिया। उस समय भी बिन्दा डर के मारे कुछ न बोली जैसे सिर और बाल दोनों नयी अम्मा के ही हों।

एक दिन चेचक की बीमारी से और सौतेली माँ के अत्याचार से बिन्दा अपनी आकाश–वासिनी अम्मा के पास चली गयी।

आज भी बिन्दा की सौतेली माँ के जैसी कई सौतेली माँ हैं, जो बच्चों पर इतना कठोर, पीड़ा जन्य व्यवहार करती हैं कि बच्चे घर छोड़कर ही नहीं संसार छोड़कर चले जाते हैं।

इन्हीं सौतेली 'माँ' के कारण कहना पड़ रहा है कि जन्म देने वाली माँ का स्थान संसार में कोई नहीं ले सकता।

'स्मृति की रेखाएँ' की 'भक्तिन' रेखाचित्र में महादेवी जी ने भक्तिन की जीवन कथा का वर्णन किया है। भक्तिन का जन्म 'झूँसी गाँव–प्रसिद्ध एक अहीर सूरमा[36] के यहाँ हुआ था नाम रखा गया 'लछमिन अर्थात लक्ष्मी'[37] छोटी सी आयु में ही माँ का देहान्त हो गया। पिता ने दूसरा विवाह कर लिया, लक्ष्मी की नई माँ के आते ही विमाता वाला ईर्ष्या जन्य व्यवहार शुरू हो गया। पाँच वर्ष की उम्र में लक्ष्मी का विवाह हो गया और नौ वर्ष के होते ही 'गौना देकर विमाता ने बिना माँगा पराया धन लौटाने वाले महाजन का पुण्य लूटा।''[38]

लक्ष्मी के ससुराल जाते ही विमाता ने धन–सम्पत्ति पर अपना अधिकार जमा लिया। लक्ष्मी पिता की लाड़ली एकलौती बेटी थी, उसके ससुराल जाने के बाद पिता बीमार रहने लगे, लक्ष्मी को पिता की बीमारी की सूचना तक विमाता ने न भेजा। इस डर से कि कहीं बेटी आई तो उसका बाप उसे कुछ दे न जाए उसके पिता के देहान्त के बाद विमाता ने पुत्री के ससुराल सूचना भेजी।

विमाता सौतेले बच्चों से उनका सारा अधिकार कितनी आसानी से छीन लेती है अपना स्वार्थ साधने के लिए। भक्तिन के बाद चीनी फेरीवाला का प्रसंग है जिसमें विमाता का एक दूसरा ही रूप चित्रित हुआ है।

चीनी फेरीवाला जो इलाहाबाद में फेरी लगाता है और महादेवी जी के यहाँ जरूर जाता है, उन्हें कुछ न कुछ खरीदना पड़ता, चाहे छोटा–सा रूमाल ही खरीदें, चीनी महादेवी जी को सिस्तर कहता, उसने अपनी करुण–मार्मिक कथा महादेवी जी को सुनाई थी।

चीनी की माँ उसे जन्म देकर सात वर्ष की बहिन के संरक्षण में छोड़कर परलोक

चली गई, पिता ने दूसरा विवाह कर बर्मी चीनी स्त्री को नई माँ के रूप में ला बिठाया और फिर दोनों बच्चों पर विमाता ने कठोर यातनाएं देना आरम्भ कर दिया। पाँच वर्ष में पैर रखते ही चीने के पिता भी एक दुर्घटना में चल बसे और फिर विमाता के अत्याचार से बहिन पड़ोसियों के बर्तन माजकर छोटेभाई का पेट भरती। किशोरी बालिका यदि विमाता के प्रस्ताव की अवज्ञा करती तब "बदला उसीको नहीं उसके अबोध भाई को कष्ट देकर भी चुकाया जाता था। अनेक बार उसने ठिठुरती हुई बहिन की कम्पित उँगलियों में अपना हाथ रख, उसके मलिन वस्त्रों में अपना आँसुओं से धुला मुख छिपा और उसकी छोटी-सी गोद में सिमटकर भूख भुलाई थी।"[39]

एक रात चीनी बिछौने पर लेटकर आधी आँख खोले विमाता को बहिन का काया-पटल करते देखा। "उसके सूखे ओठों पर विमाता ने लाली लगाई गालों पर सफेद गुलाबी रंग लगाया, बालों को सँवारा और रंगीन वस्त्रों से सजाकर उसे विमाता ने रात को घर से बाहर ढकेल दिया। बालक चीनी यह देखकर विस्मय से भर गया और रोते-रोते सो गया, 'जागा तो बहिन उस गठरी बने भाई के मस्तक पर मुख रखकर सिसकियाँ रोक रही थी। उस दिन उसे अच्छा भोजन मिला, दूसरे दिन कपड़े तीसरे दिन खिलौने पर बहिन के दिनों-दिन विवर्ण होने वाले होठों पर अधिक गहरे रंग की आवश्यकता पड़ने लगी, उसके उत्तरोत्तर फीके पड़ने वाले गालों पर देर तक पाउडर मला जाने लगा।

बहिन के छीजते शरीर और घटती शक्ति का अनुभव बालक करता था; पर वह किससे कहे, क्या करे यह उसकी समझ के बाहर की बात थी।"

चीनी प्रतिदिन सोचता कि प्रत्येक व्यक्ति से पिता का पता पूछेगा और एक दिन चुपचाप उनके पास पहुँच और उसी तरह चुपचाप उन्हें घर लाकर खड़ा कर देगा-तब यह विमाता कितनी डर जायेगी और बहिन कितनी प्रसन्न होगी?[40]

लेकिन ऐसा कुछ न हुआ। एक दिन बहिन घर लौटी ही नहीं। बालक चीनी, पिता और बहिन की खोज में घर छोड़कर निकल गया।

ऐसी स्वार्थी लालची विमाताओं के कारण बच्चों का वर्तमान, भविष्य दोनों अंधकार में भटकने लगता है और उनका सारा जीवन एक अभिशाप बनकर रह जाता है।

हिन्दी उपन्यास निर्मला में से लिया गया है -

"ईश्वर न करे, लड़कों को सौतेली माँ से पाला पड़े। जिसे अपना बना-बनाया घर उजाड़ना हो, अपने प्यारे बच्चों की गर्दन पर छुरी फेरवानी हो, वह बच्चों के रहते हुए अपना दूसरा ब्याह करे। ऐसा कभी नहीं देखा कि सौत के आने पर घर तबाह न हो गया हो। वही बाप जो बच्चों पर जान देता था, सौत के आते ही उन्हीं बच्चों का दुश्मन हो जाता है, उसकी मति ही बदल जाती है। ऐसी देवी ने जन्म ही नहीं

लिया, जिसने सौत के बच्चों को अपना समझा हो।''[41]

बाल विवाह : बीसवीं सदी की शुरुआत से लेकर मध्यावधि तक बाल-विवाह का प्रचलन खूब रहा। यह प्रथा परंपरावादी रही। हिन्दू समाज में धर्मशास्त्रों के अनुसार कन्या के विवाह के पूर्व रजो-दर्शन की आशंका से जाति-च्यूत हो जाने का भय इस प्रथा को और सहायक रूप प्राप्त हुआ है। हमारे रूढ़िवादी समाज में यदि सात-आठ साल की कन्या का विवाह न हो जाए तब उसके माता-पिता परिवार को समाज की नजरों में निंदनीय माना जाता था।

महादेवी जी के समय में इस विधा का प्रचलन था। उन्होंने अपने गद्य संग्रह 'अतीत के चलचित्र' में इस बाल विवाह की विफलता को चित्रितक किया है। बिट्टो तीन भाइयों की अकेली बहिन बड़े दुलार में पली उसका विवाह अबोधपन में ही हो गया। महादेवी जी के शब्दों में - ''वैधव्य भी अनजाने आ पड़ा न पहली स्थिति ने उसे उल्लास में बहाया था न, दूसरी स्थिति उसे निराशा में डुबा पायी।''

कन्या ससुराल वाले उसे अशुभ मान के नहीं ले गये और माता-पिता ने ससुराल भेजा भी नहीं। उसे क्या पता था कि माता-पिता के आँख मूँदते ही संसार की सभी वस्तुओं का मूल्य ही बदल जायेगा।[42] फिर भाभियाँ उसे नित्य नवीन मानसिक, शारीरिक यातनाएँ देने लगीं। उसका जीवन कठोर और दुःखदायी बन गया।

बालिका बिट्टो विवाह की गंभीरता को समझती थी न ही वैधव्य का अर्थ उसके लिए पहली स्थिति न दूसरी स्थिति का कोई मायने नहीं रखती। उसका दोष क्या है? 'स्मृति की रेखाएँ' में 'भक्तिन' के वृतान्त के द्वारा बाल-विवाह की कुप्रथा को चित्रित किया है। 'भक्तिन' का जन्म एक अहीर सूरमा के यहाँ हुआ नाम रखा गया लक्ष्मी। पिता ने पाँच की वय में ही लक्ष्मी का विवाह कर 'शास्त्र से दो पग आगे रहने की ख्याति कमाई,[43] और लक्ष्मी नौ वर्ष की हुई तब गौना दे डाला, लक्ष्मी के माँ बनते ही उसका जीवन, कठोर, और दुःखदाई हो गया।

कन्या का छोटी उम्र में विवाह होना अर्थात छोटी उम्र में ही उसका माँ बनना, जिसका कुप्रभाव उस माँ के स्वास्थ्य पर और बालक पर भी पड़ता है। क्या यह ठीक है?

इस प्रथा का दुष्परिणाम लड़कियों को ही झेलना पड़ता है।

'स्मृति की रेखाएँ' के 'बिबिया' रेखाचित्र में बिबिया धोबी की पुत्री है उसके माता-पिता ने उसके जन्म से पहले ही उसका विवाह निश्चित कर लिया, पाँच वर्ष में ब्याह भी हो गया; पर गौना से पहले ही वर की मृत्यु हो गई। बिबिया भी बाल विवाह से पीड़ित है। उसका जीवन इस कुप्रथा के कारण और दुःख पीड़ा से भर गया है।

आज के शिक्षिक युग में यह परंपरा न के बराबर हो चुकी है फिर भी खत्म तो नहीं हुई है।

आज भी उत्तर भारत के अविकसित गाँवों और कई अन्य राज्यों के अविकसित गाँवों में रुढ़िवादी समाज के बड़े–बूढ़े बालक–बालिका के भविष्य की चिंता किए बिना इस प्रथा को चला रहे हैं।

आज भी कुछ माता–पिता ऐसे हैं के चार, बेटियाँ हो जाती हैं, वे अपने दायित्व से मुक्त होने के लिए बेटी रूपी बोझ को उतार कर जल्द से जल्द उनका विवाह करा देना चाहते हैं। पढ़ने–लिखने, खेलने खाने की उम्र में उन्हें ससुराल की अनेकों जिम्मेदारी तले दबाकर उनका जीवन दुःख और पीड़ा से भर देना चाहते हैं ऐसा क्यों ?

विधवा नारी संघर्ष तथा उसकी समस्याएँ : हमारे हिन्दू समाज में नारी का जितना शोषण होता रहा है। उससे भी अधिक शोषण, अत्याचार विधवा नारी का हुआ है। विधवा की दयनीय स्थिति सबसे ज्यादा मध्यवर्गीय परिवारों में रही है।

बाल विवाह को बढ़ावा देने के कारण 19वीं सदी के उत्तरार्ध से 20वीं सदी के पूर्वार्ध तक, बाल–विधवाओं की संख्या अधिक हो गयी थी। जिस कारण विधवा समस्या और जटिल हो गयी। हिन्दू समाज में विधवा जीवन नारी के लिए भयंकर अभिशाप के रूप में रहा है। विधवा नारी का जीवन परिवार, समाज में उपेक्षित एवं तिरस्कृत होने के कारण उसके जीवन का कोई मूल्य नहीं रहा।

महादेवी जी ने विधवा स्त्रियों की परिस्थितियों का चित्रण अपने मार्मिक शब्दों में किया है। तो साथ ही विधवा के अधिकारों को भी व्यक्त किया है।

'अतीत के चलचित्र' संस्मरण संग्रह में 'भाभी' रेखाचित्र में महादेवी जी अपनी बाल्यावस्था में जिस पड़ोस की विधवा स्त्री को 'भाभी' कहती थीं उस बाल विधवा की दयनीय दशा का वर्णन महादेवी जी ने किया है।

भाभी इन्दौर के एक मारवाड़ी सेठ के इकलौते बेटे की विधवा है। विवाह के एक साल बाद पति बिना बीमारी के ही मर गया और 'भाभी' विधवा के नाम से कलकिंत हो गई।

पति की मृत्यु का दोष उस विधवा स्त्री पर परिवर, समाज लगाता है और उसकी अवहेलना उपेक्षा कर उसे अपमानित भी करता है।

आज भी हमारे समाज में विधवा स्त्रियों को किसी शुभ कार्य में रखना अशुभ मानते हैं। महादेवी जी के शब्दों में, "वृद्ध ससुर एक ही समय भोजन करते थे और वह तो विधवा ठहरी। दूसरे समय भोजन करना ही यह प्रमाणित कर देने के लिए पर्याप्त था कि उसका मन विधवा के संयम–प्रधान जीवन से ऊबकर किसी विपरीत दिशा में जा

रहा है।[44]

जैसे हमारे हिन्दू धर्म का संपूर्ण अस्तित्व ही उस विधवा के सतीत्व पर टिका है।''

भाभी सुबह दस बजे तक में ससुर को खिला–पिला देती और ससुर दुकान चले जाते और फिर विधवा उस खंडहर जैसे घर में अकेले ही बिना किसी संगी–साथी के घर के कार्य करती कपड़े धोना, पानी भरना, बरतनों को राख से चाँदी–सोने के समान चमकाना, कूटना–पीसना आदि कार्यो को समाप्त करती।

महादेवी जी लिखती हैं – 'इतने काम में भी उस अभागी का दिन द्रोपदी के चीर से होड़ लेता था।'

भाभी को दुकान की ओर जाना निषेध होने के कारण वह अवकाश का समय उसी टाट के परदे के पास बिता देती थी, जहाँ से कुछ मकानों के पिछवाड़े और एक–दो आते–जाते व्यक्ति ही दिख सकते थे; परन्तु इतना ही उसकी चञ्चलता का ढिंढोरा पीटने के लिए पर्याप्त था।[44]

गाँव की स्त्रियाँ व्यंग करते कहती – ''इसकी निर्लज्जता देखो–ससुर दुकान में गये नहीं कि वह परदे से लगी नहीं। घर में कोई देखने वाला है ही नहीं। एक ननद है, जो शहर में ससुराल होने के कारण जब–तब आ जाती है और तब इसकी खूब ठुकाई होती।''[45]

महादेवी जी लिखती है – ''वृद्ध सेठ की सौभाग्यवती पुत्री अपने नैहर आती थी। उसके चले जाने के बाद भाभी के दुर्बल गोरे हाथ पर जलने के लम्बे, काले निशान और पैरों पर नीले दाग रह जाते थे;[46]

एक स्त्री दूसरी स्त्री को बड़ी सहजता से मानसिक और शारीरिक यातनाएँ देती है, जैसे उसका प्राप्त ही उसे दे रही है।

उस विधवा बहू को रंगीन वस्त्र वर्जित थे। इस बात से अन्जान बालिका महादेवी ने भाभी के सिर पर काढ़ी रंगीन ओढ़नी को डाल दिया और भाभी अपनी उस स्थिति को भूल गयी जिसमें रंगीन वस्त्र वर्जित थे और प्रसन्न, बेसुधपन में उसे ओढ़े थी। तब एका–एक ''बींदनी (बहू) सुनकर उसकी सुधि लौटी, तब हतबुद्धि से ससुर और क्रोध से जलते अंगारे–जैसी आँखोवाली खुली तलवार–सी कठोर ननद ने क्रूरता का ऐसा प्रदर्शन किया कि विधवा वधू मन से ही नहीं शरीर से भी बेसुध हो गयी।

उस एक घटना से बालिका प्रोढ़ हो गयी थी और युवती वृद्ध।''

महादेवीजी के शब्दों में – प्रायः सोचती हूँ जब वृद्ध ने कभी न खोलने के लिए आँखें मूद ली होंगी तब वह जिसे उन्होंने संसार की ओर देखने का अधिकार ही नहीं

दिया था, कहाँ गयी होगी?[47]

अपने अकाल वैधव्य के लिए विधवाएँ दोषी नहीं ठहराई जा सकतीं। उन्हें कोई यदि धोखा देता है तो उसका दायित्व भी उस पर नहीं फिर भी समाज है जो उन्हें कलंकिनी कहता है। समाज के पुनीत कार्यो में वे उपस्थित नहीं रह सकतीं यह विडम्बना नहीं तो क्या है? आज भी समाज में अनेक विधवाएँ हैं जिनकी यौवन सरिता एक ओर उमड़ती होती है दूसरी ओर उन्हें संयम का बाँध बाँधने का आदेश दिया जाता है। उनके मन की अभिलाषाएँ हँसती हैं फिर भी उस हँसी को रोकने के लिए उन्हें बाध्य किया जाता है उनके रंगीन स्वप्न धूमिल हो जाते हैं, खो जाते हैं, मिट जाते हैं। 'अतीत के चलचित्र' शीर्षक गुणाक के दूसरे चित्र की 19 वर्षीय दुर्बल सुकुमार बालिका जैसी विधवा की विवशता का वर्णन करती हुई महादेवी जी लिखती हैं कि उसके ''जीवन के सुनहले स्वप्न गुड़ियों के घरौंदे के समान दुर्दिन की वर्षा में केवल बह ही नहीं गये उसे इतना एकांकी छोड़ गए कि उन स्वप्नों की कथा कहना भी सम्भव न हो सका।''[48] समाज की एक विधवा का करुण चित्र जो केवल इसलिए जीवित है कि मृत्यु उससे रूठी हुई है।

'भाभी' रेखाचित्र में यह स्पष्ट है कि एक विधवा स्त्री को समाज परिवार कैसा दण्ड देता है? धार्मिक ढकोसले की दुहाई दे उस विधवा पर अत्याचार करते हैं। वह स्त्री पति के मरते ही अपना सारा सुख खत्म कर देती है और घर–परिवार के आदेश अनुसार अपना जीवन बिताती है। क्या उसकी भक्ति निष्ठा, सेवा का यही पुरस्कार मिलना चाहिए?

'बिट्टो' भी विधवा जीवन की यातनाओं का शिकार है। बाल विधवा बिट्टो तीन भाइयों की अकेली बहिन होने के कारण बहुत लाड़–प्यार में पली। बाल्यवस्था में विवाह हो गया और विवाह के साल बिट्टो के पति की मृत्यु हो जाने के कारण उसके ससुरालवाले उस बहू का नाम लेना भी अशुभ मानने लगे। इसी कारण बिट्टो के माता–पिता ने अपनी विधवा बेटी को उसके ससुराल नहीं भेजा।

महादेवी जी लिखती हैं – ''विवाह उसके अबोधपन में ही हो गया और वैधव्य भी अनजाने आ पड़ा। न पहली स्थिति ने उसे उल्लास में बहाया था न, दूसरी स्थिति उसे निराशा में डुबा पायी।''

बिट्टो अपने मैके में राज कन्या के समान रहने लगी। लेकिन उसे क्या पता था, कि माता–पिता जब तक होते हैं तब तक ही, मैके में बेटी का स्थान बना रहता है। बिट्टो की माँ की मृत्यु के बाद भी स्थिति सामान्य थी लेकिन ''पिता के आँख मूँदते ही मानो संसार की सब वस्तुओं का मूल्य ही बदल गया।''[49]

बिट्टो को उसकी अपनी भाभियाँ, तरह-तरह की यातनाएँ देने लगीं और कुछ सौभाग्यवती स्त्रियों के साथ मिलकर बिट्टो को उसके पति के मृत्यु का दोषी ठहराने लगी।

महादेवी जी लिखती हैं – "तब उसका हृदय पीड़ा की अनुभूति के साथ वैसे ही चौंक पड़ा, जैसे सोता हुआ व्यक्ति अंगार के स्पर्श से जाग जाता है।"

भाभियों ने बिट्टो पर नित्य नवीन मानसिक और शारीरिक यातनाओं (कष्टों) का प्रहार करने लगी घर के नौकर-चाकर कम कर दिये। बिट्टो से गलती होती तब उसे भाभियाँ मारती भी और व्यंग्य करते "कहती थीं – कि उसके भाई सतयुग के हैं, नहीं तो कौन एक निठल्ले व्यक्ति को घर बैठे-बैठे खिला सकता है।"

महादेवी जी आगे लिखती हैं – "यह स्वर तो उसके लिए एकदम नया था। वह समझ ही न पाती कि जिस घर में उसका जन्म और पालन हुआ है, उसी में यदि रात-दिन काम करके अपने ही सहोदरों से उसे भोजन वस्त्र मिल जाता है, तो उसे कृतज्ञता के समुद्र में क्यों डूब जाना चाहिए। अकेले बड़े भाई ही नौकर थे, शेष दोनों उसी जमीन-जायदाद की देख-रेख में लगे रहते थे जो उसके भी पिता की थीं।"[50]

विधवा स्त्री की स्थिति जैसे ससुराल में होती है। वैसे ही मैके से होती है। 'बिट्टो' संस्मरण में यह स्पष्ट है। तो दूसरी ओर महादेवी जी ने विधवा नारी के अधिकारों को भी स्पष्ट किया है।

समाज में आज भी विधवा स्त्रियों की स्थिति में अधिक सुधार नहीं हुआ है। इसका कारण परिवार, समाज की एवं जाति बिरादरी की कुछ सौभाग्यवती स्त्रियाँ भी हैं। जो विधवा के साथ सहानुभूति का व्यवहार न करके उनके साथ क्रूरता का व्यवहार करती हैं। क्या विधवा स्त्री को जीने का अधिकार नहीं है? क्यों उन्हें जीने का अधिकार स्त्री होकर भी नहीं दिलाना चाहती? उन विधवा स्त्रियों का गुनाह क्या है?

'घीसा' रेखाचित्र में घीसा के बाप की मृत्यु उसके जन्म से पहले ही हो गई। घीसा का बाप जाति का कोरी, पर अभिमानी मेहनती था। पत्नी के साथ ठाट-बाट से रहता था अचानक हैजे की बीमारी के कारण उसकी मृत्यु हो गई। महादेवी जी लिखती हैं – "पर स्त्री भी कम गर्वीली न निकली। गाँव के अनेक विधुर और अविवाहित कोरियों ने केवल उदारता वश ही उसकी नैया पार लगाने का उत्तरदायित्व लेना चाहा; परन्तु उसने केवल कोरा उत्तर ही नहीं दिया, प्रत्युत उसे नमक-मिर्च लागाकर तीत भी कर दिया। कह– 'हम सिंघ के मेहरारू होइके का सियारन के जाबा।'[51]

घीसा की माँ ने न पुनर्विवाह किया न लोक व्यंगों की चिंता और पति की मृत्यु के छः महीने बाद घीसा को जन्म दिया। "घर में कोई न होने के कारण अपने बच्चे

घीसा को अपने साथ लेकर लोगों के घर लीपने-पोतने का काम भी करती। और साथ ही मजदूरी भी पा जाती तो करती। जाति-बिरादरी से उपेक्षिता होते हुए भी अपना जीवन अपने बच्चे के साथ स्वाभिमान के साथ पुरातनता के आधार पर प्रचलित रूप को ग्रहण कर जीती है।

'अभागी स्त्री' रेखाचित्र में विधवा अभागी स्त्री का पति डेढ़ वर्ष तक बीमार रहा रोग अधिक भयंकर होने के कारण मृत्यु हो गई। अभागी स्त्री के ससुर पुत्र का अंतिम क्षणों में मुख देखने आये थे, अनेक रातों से जागी हुई वधू की ओर भूलकर भी ससुर ने न देखा। महादेवी जी लिखती हैं – कदाचित् उनके मन में भी यही धारणा रही हो कि उसी अनाचारिणी के कारण उसके पुत्र को जीवन से हाथ धोना पड़ा है।''

पुत्र के मृत्यु के दूसरे दिन ससुर को सामान ठीक करते देख वधू ने आँसुओं को पोंछकर ''प्रश्न किया – ''कै बजे चलना है' तो मानो ससुर-देवता पर गाज गिरी। प्रथम आघात सहकर जब उनमें बोलने की शक्ति लौटी, तब उन्होंने भी क्रूरतम प्रहार किया। कहा – 'जो लेकर अपने घर से निकली थी, वही लेकर भलमनसाहत से अपनी माँ के पास लौट जाओ, नहीं तो तुम्हारे साथ हमें बुरी तरह पेश आना पड़ेगा। स्त्री (वधू) ने क्रोध नहीं किया, मान-अपमान का विचार नहीं किया। जिस घर पर उसका न्यायोचित अधिकार था, उसी में पग भर भूमि की भीख माँगने के लिए अञ्चल फैलाकर दीनता से कहा – ''घर में कई नौकर-चाकर हैं। मेरे लिए दो मुट्ठी आटा भारी न होगा। मैं भी आपकी सेवा करती हुई पड़ी रहूँगी।''[52]

किन्तु विधवा स्त्री पर उसके ससुर ने तनिक भी सहानुभूति नहीं रखी।

महादेवी जी के इस रेखाचित्र में यह स्पष्ट किया है कि हमारे हिन्दू समाज में विधवा स्त्री के साथ कोई सहानुभूति नहीं रखता और उसे सभी अधिकारों से वंचित रखा जाता है। यहाँ तक कि उसे जायदाद में भी कोई हिस्सा नहीं देते वह चाहती तो न्यायोचित अधिकार ले सकती थी, लेकिन आश्रय-विहीन विधवा अभागी स्त्री ने ऐसा नहीं किया और सिलाई-बुनाई आदि के द्वारा अपना जीवन यापन स्वाभिमान के साथ करने लगी।

''स्मृति की रेखाएँ'' की 'भक्तिन' रेखाचित्र में भक्तिन (लक्ष्मी) उन्तीस वर्ष की उम्र में विधवा हो गई और तीन बेटियों का भार उसपर आ पड़ा।

जेठ-जिठानियों ने लक्ष्मी की भूमि आदि हड़पने के लिए उसे दूसरा घर करने का दबाव डालने लगे लेकिन लक्ष्मी उनके प्रस्ताव की अवज्ञा करते हुए कहती है – ''हम कुकुरी-बिलारी न होयँ, हमार मन पुसाई तौ हम दूसरा के जाब नाहिं त तुम्हार पचै के छाती पै हो रहा भूँजब और राज करब, समुझे रहौ।''[53]

भक्तिन (लक्ष्मी) ने न पुनर्विवाह किया न जमीन जायदाद में से किसी को कुछ

दिया इतना ही नहीं, सिर मुंडवाकर, गुरुमंत्र ले कण्ठी माला धारण कर लिया और अपनी छोटी लड़कियों का विवाह कर दिया और अने बड़े जमाई को घर-जमाई बना अपनी सम्पत्ति सुरक्षित कर लीं।

समाज में भक्तिन (लक्ष्मी) जैसी नारी आज भी है जो पुरातनता के आधार पर प्रचलित रूप को ग्रहण कर समाज, परिवार का डटकर सामना करती है और स्वाभिमान के साथ अपना जीवन अपने बच्चों के साथ जीती है।

महादेवी जी ने घीसा की माँ, अभागी स्त्री और भक्तिन के चरित्र के माध्यम से ऐसे चेतना युक्त आदर्श को प्रस्तुत किया है जो समाज तथा व्यवहार में संभव हुए हैं।

अवैध मातृत्व : अवैध मातृत्व की समस्या प्राचीन काल से चली आ रही है। यदि कोई युवती विवाह से पहले किसी अवैध संबंधों से मातृत्व धारण करती है तब उसे अवैध मातृत्व कहा जाता है। हमारे समाज में स्त्री के विवाह के बाद जन्मी हुई संतान को ही वैध माना है, चाहे वह किसी अन्य पुरुष की ही संतान क्यों न हो ? हमारे समाज में छिपकर किए अपराध को इतना बुरा नहीं मानते जितना खुलकर किए गए कर्म को। यदि किसी व्यक्ति का पाप समाज के समाने खुलकर नहीं आता तो समाज उसे जानकर भी नजर अंदाज कर देता है। लेकिन यदि कोई साहसी युवती अपने अवैध संबंधों से उत्पन्न सन्तान को जन्म देना चाहती है या अपनाती है तो परिवार, रिश्तेदार और समाज उस युवती को कलंकित कह, उसका जीना दुभर कर देते है।

महादेवी जी ने 'अतीत के चलचित्र' संग्रह की 'बालिका माँ' रेखाचित्र का चित्रण किया है, जो अवैध मातृत्व से पीड़ित होते हुए भी अपने बालक को जन्म देती है।

महादेवी जी का कथन है – "संसार में चाहे इसको कोई परिचयात्मक विशेषण न मिला हो परन्तु अपने बालक के निकट तो वह गरिमामयी जननी की संज्ञा ही पाती रहेगी?"

महादेवी जी ने आगे भी उन पीड़ित स्त्रियों की समस्या का हल बताती हुई कहती है – "यदि यह स्त्रियाँ अपने शिशु को गोद में लेकर साहस से कह सके कि "बर्बरों, तुमने हमारा नारीत्व, पत्नीत्व सब ले लिया; पर हम अपना मातृत्व किसी प्रकार न देंगी तो इनकी समस्याएँ तुरन्त सुलझ जावें। जो समाज इन्हीं, वीरता, साहस और त्याग भरे मातृत्व के साथ नहीं स्वीकर कर सकता, क्या यह इनकी कायरता और दैन्य भरी मूर्ति को ऊँचे सिंहासन पर प्रतिष्ठित कर पूजेगा?

युगों से पुरुष स्त्री को उसकी शक्ति के लिए नहीं सहनशक्ति के लिए ही दण्ड देता आ रहा है।"[54]

बालिका माँ की तरह हर युवती जाग्रत हो अपने बालक को जन्म देकर उन्हें अपना

ले, तब न कोई भ्रूण हत्या होगी और न कोई बालक अनाथ रहेगा और न कोई स्त्री मातृहिन बेवश, लाचार रहेगी।

परित्यक्त नारी : पति के द्वारा पत्नी को त्याग देना यह परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। कोई भी स्त्री अपना पत्नीत्व आसानी से नहीं छोड़ती वह हर मुसीबत से लड़ती है। लेकिन हमारे पुरुष प्रधान समाज में पुरुष अपनी पत्नी को अपने अनुसार ही सदैव उपयोग करता रहा है। वह चाहे जैसा हो उसकी पत्नी प्राचीन भारत की पतिव्रता का आदर्श ही होना चाहिए। सारी इच्छाएँ स्त्रियों से ही रखी जाती हैं, पुरुषों से नहीं यदि कोई स्त्री अपने स्वाभिमान के लिए आवाज भी उठाती है तो समाज, परिवार पंचपरमेश्वर (कानून) सभी मिलकर उसे सजा देते हैं। ऐसी ही समस्या से पीड़ित है की 'स्मृति की रेखाएँ' की 'बिबिया' जिसका विवाह रमई नामक धोबी से हुआ था वह शराबी जुआरी दोनों था।

महादेवीजी लिखती हैं – 'शराबी होश में आने पर मनुष्य बन जाता है, पर जुआरी कभी होश में आता ही नहीं। एक दिन रमई के जुए के साथी मियाँ करीम ने रमई को कहा 'तुम तो अच्छी छोकरी हथिया लाये हो। उसी को दाँव पर क्यों नहीं रखते? रमई प्रस्तु भी हो गया था। लेकिन यह बात बिबिया तक पहुँच गई और एक दिन मियाँ करीम को बिबिया ने अपने द्वार पर देखा बस फिर घर में से चाकू निकाल 'उसने उन्हें बता दिया कि रमई के ऐसी हरकत करने पर वह उन दोनों के पेट में यही भोंक देगी। फिर चाहे उसे कितना ही कठोर दण्ड क्यों न मिले; पर वह ऐसा करेगी अवश्य। वह ऐसी गाय–बछिया नहीं है, जिसे चाहे कसाई के हाथ बेच दिया जावे, चाहे वैतरणी पर उतरने के लिए महाब्राह्मण को दान कर दिया जावे।[55]

बिबिया स्वाभिमानी नारी है जो अपनी इज्ज़त के लिए उपभोग का साधन समझने वाले पुरुषो के सामने विद्रोह कर उन्हें मजा भी चखा सकती है।

जुआरी साथियों ने रमई के कान भर दिये रमई ने बिबिया को रखने से मना किया और पंच परमेश्वर भी उसीके पक्ष में हो गये; क्योंकि वे सभी रमई के समानधर्मी थे। यदि उनके घर में ऐसी विकट स्त्री होती, जिसके सामने वे शराब पीकर जा सकते थे, न जुआ खेलकर, तो उन्हें भी यही करना पड़ता। ''बिबिया पति के द्वारा त्याग दी जाती है और भाई के घर आकर रहती है, भाभी सुबह से रात तक उससे काम कराती और व्यंग्य बाणों से प्रहार करती। महादेवी जी लिखती हैं ''जात–बिरादरी में फैली बदनामी उसका जीना ही मुश्किल किये दे रही थी। ऐसी सुन्दर और मेहनती स्त्री को छोड़ना सहज नहीं है, इसीसे सबने अनुमान लगा लिया कि उसमें गुणों से भारी कोई दोष होगा।''[56]

परित्यक्ता नारी को परिवार समाज सम्मान की नजरों से नहीं देखता। ऐसी स्त्रियों का दोबारा विवाह भी उनके लिए श्राप बन जाता है। उनका भविष्य और अंधकारमय हो जाता है। उसे उस दूसरे घर में भी संदेह की नजरों से ही देखा जाता है। उस पर प्रतिबंध लगाये जाते हैं, इतना ही नहीं उस पर व्यंग्य का प्रहार किया जाता है और उसका जीना भी दुभर कर देते हैं। ऐसी समस्या से बिबिया दोबारा पीड़ित होती है जब उसका विवाह उसके भाई ने उसके न चाहते हुए भी अपनी ही जाति के एक अधेड़ विधुर झनकू नामक धोबी से करा दिया। झनकू को बिबिया के उम्र का बेटा था जो आवारा लम्पटवृत्ति का था। झनकू अपने पुत्र भीखन पर कड़ी दृष्टि रखता और पत्नी के व्यवहार में परिवर्तन खोजता रहता, महादेवी जी का कथन है – ''चरित्रहीन व्यक्ति दूसरों पर जितना सन्देह करता है, उतना सच्चरित्र नहीं। झनकू भी इसका अपवाद नहीं था।''[57]

सौतेले आवारा पुत्र की गलतियों को बिबिया नजरंदाज कर भी देती थी लेकिन एक दिन भोजन के समय भीखन की सरसता इस सीमा तक पहुँच गई कि विमाता ने चूल्हे से जलती हुई लुआठी निकाल कर कहा – 'हम तोहार बाप कर मेहरारू अही। अब भाखा – कुभाख सुनब तो तोहार पिठिया के चमड़ी न बची।'

बिबिया में प्राचीन भारत की पतिव्रता नारी का आदर्श ही तो है, जो अपनी ही उम्र के बेटे के साथ माता का व्यवहार कर उसे सुधारने का प्रयत्न करी है।

जब पुत्र के हाथ कुछ नहीं लगा तब उसने अपनी विमाता के सम्बन्धों की दन्त कथाएँ फैला दीं।

जाति–बिरादरी के लोगों ने सच भी मान लिया मानते क्यों नहीं ? उन्हें तो मौका चाहिए। उसमें भी कुछ स्त्रियाँ तो प्रपंच करने में आगे होती हैं। जाति–बिरादरी की धोबिनें 'बिबिया के छल–छन्द की नीचता और अपने पतिव्रत की उच्चता पर टीका–टिप्पणी करके पतियों से हँसुली – कड़े के रूप में सदाचार के प्रमाणपत्र माँगने लगीं। घाट पर झनकू की श्रवणसीमा में बैठकर धोबी अपने–आपको त्रिया चरित्र का ज्ञाता प्रमाणित करने लगे।'[58]

यह सब सुनकर झनकू घर लौट रहा था रास्ते में पुत्र मिला उसे भी झनकू ने पीटा पुत्र ने सारा दोष उस निर्दोष माता पर डाल दिया जिसने कोई गुनाह किया ही नहीं था। शंका युक्त झनकू ने घर लौटकर पत्नी बिबिया से कोई उत्तर न माँगा, 'उस रात प्रथम बार बिबिया पीटी गई। लात, घूँसा, थप्पड़, लाठी आदि का सुविधानुसार प्रयोग किया गया; पर अपराधिनी ने न दोष स्वीकार किया, न क्षमा माँगी और न रोई–चिल्लाई। इच्छा होने पर बिबिया लात–घूँसे का उत्तर बेलन–चिमटे से देने का सामर्थ्य रखती थी;

पर वह झनकू का इतना आदर करने लगी थी कि उसका हाथ न उठ सका।'[59]

महादेवी जी ने नारी चेतना का विद्रोह रूप बिबिया के चरित्र से उजागर किया है। तो दूसरी ओर एक ऐसी स्वाभिमानी पतिव्रता नारी का चित्रण है जो पति की मार खाती रही लेकिन उसका जवाब न दिया बिबिया हर मुसीबत से लड़ सकती है। लेकिन परम्पराग्रस्त समाज से नहीं लड़ सकती। जिसने उस पर तरह–तरह के लांछन लगाए।

इसी वजह से बिबिया ने पंचदेवताओं के सामने कोई सफाई नहीं दिया।

महादेवी जी का कथन – बिबिया जैसे स्वभाव के व्यक्ति पराजित होने पर भी पराजय स्वीकार नहीं करते। फिर बिबिया तो विद्रोह की कभी राख न होनेवाली ज्वाला थीं। संसार ने उसे अकारण अपमानित किया और वह उसे युद्ध की चुनौती न देकर भाग खड़ी हुई और वह अपने जीवन का अन्त कर लेती है।[60]

जिस समाज में परिवार जाति–बिरादरी की स्त्री, पुरुष और पाँच देवता ही मृतक हो उनके पास न्याय की कैसी गोहार लगाई जाय? जिससे वे जीवित होकर परित्यक्ता स्त्री को न्याय दे सके उन्हें भी जीने का अधिकार दिला सके।

वेश्या समस्या या वेश्यावृत्ति : पुरुषों की भोगलालसा, मनोरंजन से यह समस्या का जन्म हुआ। नारी की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति ठीक न होने के कारण वैश्यावृत्ति को और बढ़ावा मिला। हर स्त्री को अपना सतीत्व प्यारा होता है। परिस्थित के आगे विवश होकर ही अपनी इज्ज़त बेचती है। यदि ये समस्या हल हो जाये तो बहुत कम स्त्रियाँ पतित होंगी।

स्त्रियाँ वैश्यावृत्ति को मजबूर होकर अपनाती हैं। घर की आर्थिक स्थिति के चलते या फिर घर के स्वार्थी सदस्य द्वारा प्रताड़ित अपमानित होकर घर छोड़ने पर मजबूर हो जाती है। नारी जब वैश्यावृत्ति स्वीकार कर लेती है तब उसके लिए समाज के दरवाजे बन्द हो जाते हैं। उसे पुनः प्रवेश के लिए कोई सुविधा नहीं मिलती। तब उस पतिता नारी की पुत्री को ही कैसे प्रवेश मिले?

'अतीत के चलचित्र' संस्मरण संग्रह की 'अभागी स्त्री' रेखाचित्र में अभागी स्त्री 'पतित माँ की पुत्री है। अभागी स्त्री मानवीय गुणों से ओत प्रोत है। वो शिक्षित और जागरुक है। उसका पति लम्बे समय से बीमार था। दवा–दारू में सब कुछ स्वाहा हो चुका है। फिर भी अपनी माँ के पास हाथ नहीं फैलाती ससुर बेटे की मृत्यु के अंतिम क्षणों में बेटे का मुख देखने आये, पुत्र की मृत्यु के दूसरे दिन पिता सामान ठीक कर रहे थे। तब अभागी स्त्री (वधू) ने आँसुओं को पोंछकर "प्रश्न किया – 'कै बजे चलना है' तो मानो ससुर–देवता पर गाज गिरी। प्रथम आघात सहकर जब उनमें बोलने की शक्ति लौटी, तब उन्होंने भी क्रूरतम प्रहार किया। कहा – 'जो लेकर अपने घर से

निकली थी, वही लेकर भलमनसाहत से अपनी माँ के पास लौट जाओ, नहीं तो तुम्हारे साथ हमें बुरी तरह पेश आना पड़ेगा। हमारे कुल में दाग लगाकर भी क्या तुम्हें सन्तोष नहीं हुआ?

स्त्री (वधू) ने क्रोध नहीं किया, मान–अपमान का विचार नहीं किया। जिस घर पर उसका न्यायोचित अधिकार था, उसीमें पग भर भूमि की भीख माँगने के लिए अञ्चल फैलाकर दीनता से कहा – 'घर में कई नौकर–चाकर हैं। मेरे लिए दो मुट्ठी आटा भारी न होगा। मैं भी आपकी सेवा करती हुई पड़ी रहूँगी।' – किन्तु ससुर का उत्तर लज्जा को भी लज्जित कर देने वाला था।[61]

महादेवी वर्मा जी ने अतीत के चलचित्र अभागी स्त्री की मनोवृत्ति का उसकी मनोवेदना का प्रकटीकरण किया है जहाँ उसके लिए कोई सहानुभूति ही नहीं है।

वैश्या पुत्री अपने उज्ज्वल चरित्र द्वारा समाज के बंधन को तोड़ तो देती है लेकिन सामाजिक रूढ़ियों के सामने झुक भी जाती है। फिर भी रूढ़िवादी मनुष्य उस स्त्री को अपने समाज में स्थान नहीं देता। महादेवी जी ने रूढ़िगत समाज पर व्यंग्य करते हुए कहा है – "वह पतित कही जाने वाली माँ की पुत्री है और बिना समाज के प्रवेश–पत्र के ही साध्वी स्त्रियों के मन्दिर में प्रवेशकरना चाहती थी। उसे पता नहीं कि समाज के पास वह जादू की छड़ी है जिससे छूकर वह जिस स्त्री को सती कह देता है, केवल वही सती होने का सौभाग्य प्राप्त कर सकती है।"[62]

अगाभी स्त्री सामाजिक रूप से चेतना सम्पन्न जागरुक नारी है। वह न अपनी माँ के पास जाती है और ना विधवा–आश्रम वह सिलाई–बुनाई करके अपना गुजर बसर करती है।

इस प्रकार समाज, परिवार द्वारा उपेक्षित वैश्या पुत्री का साहसिक कदम करुणा–व्यथा से परिपूर्ण होते हुए भी रूढ़िवादी समाज के मुख पर तमाचा है।

महादेवी जी की 'स्मृति की रेखाएँ' का चीनी फेरीवाला उसकी बहिन वैश्यावृत्ति के लिए मजबूर की जाती है।

चीनी के पिता के मरते ही विमाता ने चीनी और उसकी बड़ी बहिन पर अत्याचार करना शुरू कर दिया। विमाता दोनों भाई–बहिन को भोजन न देती बहिन लोगों के बर्तन माजकर छोटे भाई का पेट भरती। बहिन और विमाता में किसी प्रस्ताव को लेकर जो वैमनस्य बढ़ रहा था, वह इस समझौते को उत्तरोत्तर विषाक्त बनाने लगा। किशोरी बालिका की अवज्ञा का बदला उसी को नहीं उसके अबोध भाई को कष्ट देकर भी चुकाया जाता था।

"व्यथा की कौन–सी अन्तिम मात्रा ने बहिन के नन्हें हृदय का बाँध तोड़ डाला,

इसे अबोध बालक क्या जाने। पर, एक रात उसने बिछौने पर लेटकर बहिन की प्रतीक्षा करते-करते आधी आँख खोली और विमाता को कुशल बाजीगर की तरह मैली-कुचैली बहिन का काया-पलट करते देखा।

उसके सूखे ओठों पर विमाता को मोटी उँगली ने दौड़-दौड़कर लाली फेरी उसके फीके गालों पर चौड़ी हथेली ने घूम-घूमकर घेर-घेर कर सँवारा और तब नए रंगीन वस्त्रों में सजी हुई उस मूर्ति को एक प्रकार से ठेलती हुई -विमाता रात के अन्धकार में बाहर अन्तर्हित हो गई।''[63]

उस दिन के बाद से छोटे भाई को अच्छा भोजन, कपड़े, खिलौने मिलने लगे। प्रतिदिन चीनी की 'बहिन का सन्ध्या होते ही काया पलट फिर उसका आधी रात बीत जाने पर भारी पैरों से लौटना, विशाल शरीर वाली विमाता का जंगली बिल्ली की तरह हलके पैरों बिछौने से उछलकर उतर आना, बहिन के शिथिल हातों से बटुए का छिन जाना और उसका भाई के मस्तक पर मुख रखकर स्तब्ध भाव से पड़ रहना आदि क्रम ज्यों-के-त्यों चलता रहा।[64]

'चीनी फेरीवाला' रेखाचित्र में चीनी की बहिन वैश्या-पुत्री नहीं है वह घर में आई नई माँ के द्वारा हो रहे अत्याचार के चलते मजबूर होकर वैश्यावृत्ति अपनाती है और अपना तन बेचने को बाध्य कराई जाती है। यह वैश्यावृत्ति का एक और नया रूप है।

इस संस्मरण में वैश्यावृत्ति का उगमस्थान या केवल कारण बाताय है। समस्या का हल ढूँढ़ने का प्रयास नहीं है।

अछूत समस्या : अस्पृश्य समस्या : स्वतंत्र भारत में अस्पृश्य जातियों को विशेषाधिकार दिया गया। गाँधी जी ने इनको 'हरिजन' नाम दिया। हरिजनों को मन्दिर में प्रवेश करने की अनुमति उच्च वर्ग नहीं देते थे। सन् 1936 में त्रावनकोर के महाराजा ने एक विशेष आज्ञापत्र द्वारा राज्य के सभी मंदिरों में हरिजनों के प्रवेश की अनुमति दे दी। गाँधीजी द्वारा स्थापित (सन् 1932) 'अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ' तथा अन्य संस्थाएँ अस्पृश्यता निवारण में एक हद तक सहायक रहीं। जाति व्यवस्था का सबसे बड़ा दोष है अस्पृश्यता या छूआछूत की भावना। सदियों से यह भावना हिन्दू समाज की एक कमी या कमजोरी रही है। आज भी यह भावना कुछ अंशों में प्रचलित है। जाति संरचना के उच्चतम स्तर पर ब्राह्मण है और निम्नतम स्तर पर चमार, भंगी जैसी जातियाँ जो अछूत मानी जाती हैं। जाति-जाति में पाई जाने वाली पवित्रता तथा अपवित्रता की भावना ने कुछ जातियों को अछूत मानने की परम्परा को जन्म दिया।[65]

हिन्दू समाज में अछूतों को अत्यन्त हेय दृष्टि से देखा जाता रहा है। ''अछूत आर्थिक दृष्टि से प्रायः निर्धन होते हैं। उच्च वर्ग के लोग उनकी इस निर्धनता का अनुचित

लाभ उठाकर उनपर तरह–तरह के अत्याचार करते हैं। कभी–कभी अछूतों की स्त्रियों को वे लोग असहाय और बदचलन समझकर उनके सतीत्व के साथ खिलवाड़ करने की कोशिश करते रहते हैं। ऐसा करते समय वे भूल जाते हैं कि प्रत्येक नारी को अपना सतीत्व बहुत प्यारा होता है। कोई भी नारी परिस्थितियों से लाचार होकर ही अपने सतीत्व का सौदा करने में सहमत होती है। हमारे समाज के उच्चवर्ग की दूसरी मान्यता यह है कि चरित्र पर रक्त और वंश का गहरा प्रभाव पड़ता है। यद्यपि वर्तमान वैज्ञानिक खोजों तथा समाजिक प्रयोगों ने इस मान्यता को पूर्ण रूप से असत्य सिद्ध कर दिया है फिर भी पुरुष पंथी अपनी प्राचीन मान्यताओं से जोंक की तरह चिपके रहना अधिक पसन्द करते हैं और नए ज्ञान को स्वीकार करने से इन्कार कर देते हैं। सबिया से सम्बन्धित रेखाचित्र ऐसे लोगों की रूढ़िबद्ध धारणाओं एवं मान्यताओं पर करारी चोट करता है। ऐसे लोग कभी भी यह सोच भी नहीं सकते हैं कि अछूतों में और वह भंगी–समाज में कोई सती नारी हो सकती है। लेकिन सबिया का चरित्र ऐसे लोगों के लिए एक चुनौती है।

भंगी समाज में विवाह उच्चवर्णों के समान एक धार्मिक सम्बन्ध न माना जाकर एक सामाजिक और आर्थिक आवश्यकता माना जाता है। उनमें विधवा विवाह होते हैं, पति–पत्नी में न पटने पर अपनी जाति के पंचों की आज्ञा लेकर दोनों तलाक ले लेते हैं और दूसरा जीवन–साथी चुन लेते हैं। यह वर्ग कमकर वर्ग है इसलिए इसमें नारी की उपयोगिता उसकी काम करने की शक्ति पर अधिक निर्भर करती है। इस समाज में नर–नारी दोनों परिश्रम कर जीविका उपार्जन करते हैं इसलिए इस वर्ग की नारियों की अपेक्षा आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्र होती हैं। यही कारण है कि इस समाज का पुरुष नारी को अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति मान उस पर तरह–तरह के बन्धन नहीं लगा पाता। यदि पुरुष को दूसरी पत्नी रखने का अधिकार है तो नारी को भी पहले पति का परित्याग कर दूसरा पति चुनने के लिए स्वतन्त्रता है।

हमारे समाज ने एक स्वर से नारी को सती माना है जो मन–प्राण से जीवन भर एक ही पति की पत्नी बनी रहती है। स्वप्न में भी किसी दूसरे पुरुष के प्रति उसके मन में आकर्षण उत्पन्न नहीं होता। इस सतीत्व के भी दो रूप होते हैं। एक नारी तो सामाजिक बन्धनों के भय से सती बनी रहती है, उसे सदैव यह भय रहता है कि उसकी किसी हरकत के कारण उसे असती घोषित न कर दे। साथ ही इस भय के मूल में वर्ग और वर्ण के सरकार भी अपना प्रभाव डालते रहते हैं। दूसरी नारी वह होती है जो सब तरह की सुविधायें पाकर भी मन–प्राण से जीवन भर एक ही पति की अराधना करती रहती है। उसके वर्ग और वर्ण के समाजिक विधान यद्यपि उसे ऐसा करने के

लिए बाध्य नहीं करते। वह विधवा हो जाने पर दूसरा विवाह करने की अधिकारिणी होती है और पति से न पटने पर उसे छोड़ दूसरा पति कर लेने के लिए भी स्वतन्त्र होती है। सबिया ऐसे ही समाज का अंग है। परन्तु फिर भी सच्चे सतीत्व की कसौटी पर वह खरी उतरती है उसका पति दुराचारी हरामखोर और बदमाश है। वह धोखेबाज और मक्कार भी है। वह प्रसूता सबिया को सौरी में छोड़कर एक दूसरी स्त्री को भगा ले जाता है और कुछ दिनों के बाद उसी स्त्री को सबिया की छाती पर ला बैठाता है। सबिया के मन को बहुत चोट पहुँचती है, पर वह हर तरह से पति को खुश रखने का प्रयत्न करती है। ऐसे पति को त्याग दूसरे पति की पत्नी बनना तो वह सोच भी नहीं पाती। पति के लिए हर तरह का त्याग करती है। यद्यपि नवीन सामाजिक विचारक बदलती हुई वर्तमान परिस्थितियों के सन्दर्भ में सतीत्व की इस पौराणिक व्याख्या को उचित नहीं मानेंगे। परन्तु हमारे समाज की परम्परागत धारणा के अनुसार सबिया को पति-अनुरक्ता सती नारी मानना पड़ेगा। इस तरह सबिया के रेखांकन द्वारा महादेवी ने एक ओर अछूतों के जीवन की तमाम विसंगतियों को चित्रित कर दिया है और दूसरी ओर यह भी बताना चाहा है कि हम जिन्हें अछूत कहते हैं, उनमें भी उच्च वर्णो की तरह मानवीय गुण-धर्म विद्यमान होते हैं। इसलिए वे अपेक्षणीय नहीं हैं। लेखिका उन नारियों को सती नहीं मानती जो पति के वैभव का पूर्ण भोग करती हुई, इस सुख-सुविधाओं के कारण पति की कमजोरियों की उपेक्षा कर जाती हैं या जो धार्मिक बन्धनों जो समाज के भयंकर दण्डों से भयभीत हो दूसरे मार्ग पर चलने का साहस नहीं कर पातीं। महादेवी सबिया जैसी नारी को ही सती मानती हैं, जो जीवन के सम्पूर्ण अभावों से अनवरत संघर्ष करती हुयी भी सदैव अडिग रहती है। वे लिखती हैं – वह (सबिया) उन महिलाओं में से नहीं है, जो पति के हल्केपन को उसके बंगले, कार वैभव आदि के पासंग रखकर भारी कर सकती है। उसकी गणना न उनमें हो सकती है जिनके यातना मन्दिर के द्वार पर स्वयं धर्म के कठोर और सजग पहरेदार हैं और न उनमें जिनके उदभ्रांत मस्तकों पर समाज की नंगी तलवार लटकती रहती है।''[66]

हिन्दू शास्त्रों की मान्यता : भारतीय समाज हिन्दू शास्त्रों की मान्यता पर विशेष आस्था रखता है।

हमारे हिन्दू धर्म में पुत्री की तुलना में पुत्र के जन्म को अधिक महत्व दिया गया है। माता-पिता की मृत्यु के बाद पुत्र के हाथों अग्नि संस्कार कराया जाता है और पितृ का तर्पण पुत्र के द्वारा ही हो सकता है। ऐसी मान्यताओं के कारण पुत्री का जन्म समाज में और अधिक अभिशाप समझा जाता है।

'स्मृति की रेखाएँ' संस्मरण संग्रह की भक्तिन ने तीन कन्याओं को जन्म दिया

जिससे उसके घर में उसका अनादर होता है होगा भी क्यों नहीं? महादेवी जी लिखती है – ''क्योंकि सास तीन–तीन कमाऊ वीरों की विद्यात्री बनकर मचिया के ऊपर विराजमान पुरखिन के पद पर अभिषिक्त हो चुकी थी और दोनों जिठानियाँ काक–भुशुण्डी जैसे काले लालों की क्रमबद्ध सृष्टि करके इस पद के लिए उम्मीदवार थीं।[67]

इसी कारण भक्तिन को दण्ड मिलना साधारण बात थी। जिठानियाँ बैठकर बाते करती और उनके कलूटे लड़के खेलते भक्तिन कूटती, पीसती, राँधती, मट्ठा फेरती और उसकी नन्हीं लड़कियाँ कंडे पाथतीं, घर की सफाई करती। भोजन के समय लड़कियों को चने–बाजरे की घुघरी और मट्ठा मिलता।

आज भी हिन्दू समाज में जिस स्त्री के बेटी हो जाती है, उनकी स्थिति में ज्यादा परिवर्तन नहीं हुआ है। जिस स्त्री को चार बेटी हो चुकी हो, उन्हें न चाहते हुए भी बेटे की राह देखने को मजबूर किया जाता है। जैसे वह स्त्री न होकर बच्चा पैदा करने वाली कोई मशीन है।

उस स्त्री के स्वास्थ्य की ओर कोई ध्यान नहीं देता, देता है तो सिर्फ अपने शास्त्रों की मान्यताओं की ओर, बेटा ही होना चाहिए। जो कुलदीपक है।

महादेवी वर्मा और भारतीय नारी की समस्या एवं महत्व

आधुनिक युग में अनेक कवियों, समाज सुधारकों और साहित्यकारों ने भारतीय नारी के यथार्थ जीवन का चित्रण करने का प्रयत्न किया है। महादेवी वर्मा ने एक नारी के रूप में नारी के जीवन की बातों का अनुभूत सत्य के रूप में अधिकार के साथ चित्रित किया है।[68]

इसका प्रमुख कारण यह भी कहा जा सकता है कि महादेवी स्वयं नारी है और नारी समस्याओं के बारे में जितनी गहराई से उनकी दृष्टि जा सकती है उतनी दूर तक पुरुष वर्ग नहीं जा सकता।[69]

महादेवी वर्मा कवि–रूप जितना प्रभावशाली है उतना ही उनका गद्य साहित्य उदात्त और जीवन की सत्यता को उजागर करता है। महादेवी का गद्य साहित्य समाज केन्द्री है जिनके कारण नारी के जीवन की विडम्बना और यथार्थता को अपनी लेखनी से उसके हर एक रूप को अपनी पैनी दृष्टि से चित्रित किया है।[70]

भारतीय समाज में नारी की स्वतंत्रता के लिए संग्राम किया गया। उसके बाद प्रश्न यह खड़ा हुआ की इस स्वतंत्रता को कैसे बनाये रखें? भारतीय नारी को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद क्या करना है? और क्या नहीं करना है? नारी विमर्श के अंतर्गत इन प्रश्नों के उत्तर महादेवी के विचारों में बड़े विवेकपूर्ण ढंग में मिल जाते हैं। नारी की स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं होता कि मनमानी की जाय। स्वतंत्रता की भी अपनी एक सीमा होती

है। फिर भी यह स्वतंत्रता परतंत्रता में परिवर्तित न हो जाये उसके लिए एक संविधान बनाया जाये। महादेवी वर्मा ने भारतीय नारी समाज के लिए एक ऐसा संविधान बनाया है, जो अपने आप में इतना पूर्ण है कि नारियों की अधिकांश समस्यों का समाधान उसमें मिल जाता है।

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY • M. S. University of Baroda

उस संविधान का नाम है "शृंखला की कड़ियाँ"। यह ग्रंथ युगों तक नारियों का पथ–प्रदर्शन करता रहेगा।

महादेवी वर्मा ने भारतीय नारी की वकालत करते हुए कहा है कि भरतीय पुरुष–समाज नारी को आज तक एक मिट्टी का खिलौना समझता रहा है। जिसे अपने मन बहलाव के लिए बाजार से खरीद लाता है, और मन भर जाने पर उसे कोने में रख देता। वह तब तक कोने में पड़ा रहता है जब तक टूट नहीं जाता। "भारतीय पुरुष" पुरुष जैसे अपने मनोरंजन के लिए रंग–बिरंगे पक्षी पाल लेता है... उसी प्रकार एक स्त्री को भी पालता है... अपना अधिकार समझता है।" नारी की दयनीय विवाहोपरांत की स्थिति को महादेवी ने चित्रित किया है – "विवाह के समय गुलाब से खिली हुई स्वस्थ बालिका को पाँच वर्ष बाद देखिए। उस समय प्रौढ़ हुई, दुर्बल संतानों की रोगिणी, पीली माता में कौन–सी विवशता, कौन–सी रुला देनेवाली करुणा न मिलेगी।"[71]

शृंखला की कड़ियाँ कृति में उन संपादकीय लेखों को संग्रहीत किया गया है, जो 'चाँद' पत्रिका की संपादिका के नाते लिखे गये थे। इन लेखों में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक की नारी समस्याओं पर महादेवी की चेतना के बीज पल्लवित हुए हैं। इन लेखों की सामाजिक, व्यक्तिगत–पारिवारिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक रीति–नीति में आलोचना करने से पूर्व स्वयं महादेवी वर्मा का वक्तव्य प्रमाण है। महादेवी वर्मा ने यह संग्रह "जन्म से अभिशप्त, जीवन से सन्तप्त, किन्तु देखने में अक्षय वात्सल्य वरदानमयी भारतीय नारी को समर्पित कर दिया है।[72]

भारतीय घरों में नारी की स्थिति : समाज में कन्या का जन्म अभिषाप हो मानो! महादेवी जी ने अपने नेत्रों से देखा कि कन्या के जन्म के समय उसके स्वागत में मेवे नहीं बाँटे जाते, बधाई नहीं गाई जाती बल्कि केवल मुँह नीचा किये चिन्ता में मग्न पिता को एक प्रकार की सांत्वना दी जाती है। कन्या के जन्म लेते ही घर वालों की क्या स्थिति हो जाती है इसका चित्रण उन्होंने अपने एक रेखाचित्र में इस प्रकार किया है – 'जैसे ही दबे स्वर से लक्ष्मी के आगमन का समाचार दिया गया वैसे ही घर के एक कोने से दूसरे कोने तक एक दरिद्र निराशा व्याप्त हो गई। बड़ी बूढ़ियाँ संकेत से मूक गाने बलियों को जाने के लिए कह देती और बड़े बूढ़े इशारे से नीरव बाजे वालों को विदा दे देते। यदि ऐसे अतिथि का भार उठाना परिवार की शक्ति के बाहर होता

तो उसे वैरंग लौटा देने के भी उपाय सहज थे।'

महादेवी जी ने ऐसा भी देखा कि कन्या के जन्म का समाचार मिलते ही पुरुष एकान्त में बैठ कर रोया है या फिर उसने चार-चार दिन तक कुछ खाया नहीं। सुश्री वर्मा जी ने कन्याओं की उपेक्षा से जितनी चोट खाई है उतनी किसी और से नहीं। एक सवाल पर कहती हैं – ''पिता के इंगित मात्र से अपने जीवन प्रभात में देखे रंगीन स्वप्नों को विस्मृति से ढक कर बिना एक दीर्घ निःस्वास लिए अयोग्य से अयोग्य पुरुष का अनुगमन करने को प्रस्तुत पुत्री को देखकर किसका हृदय न भर आवेगा। सत्य तो यह है कि भारतीय नारी जन्म से लेकर मृत्यु तक दुःखों के बोझ तले दबी रहती है उफ भी नहीं करती जो उसके भाग में नहीं होता यह तो त्याग भरा दायित्व है कि दुःख को ही सुख मान लेती है। पिता के घर हैं या पति के घर उसे तो पराश्रित ही रहना पड़ता है।[73]

पुरुष जैसे अपने मनोरंजन के लि रंग-बिरंगे पक्षी पाल लेताहै... उसी प्रकार एक स्त्री को भी पालता है... अपना अधिकार समझता है।'' नारी की दयनीय विवाहोपरांत की स्थिति को महादेवी ने चित्रित किया है ''विवाह के समय गुलाब से खिली हुई स्वस्थ बालिका को पाँच वर्ष बाद देखिये। उस समय प्रौढ़ हुई, दुर्बल संतानों की रोगिणी, पीली माता में कौन सी विवशता, कौन-सी रुला देनेवाली करुणा न मिलेगी।

तुलसीदासजी ने स्त्री की पराधीनता पर बड़ी मार्मिक पंक्तियाँ लिखी हैं –

'कत विधि सृजी नारि जग माहीं।
पराधीन सपने हु सुख नाहीं।।'

यह पंक्तियाँ विश्व साहित्य में स्त्री की पराधीनता पर लिखी श्रेष्ठ रचनाओं में से है। पराधीनता सपने में भी सुख की कल्पना नहीं करने देती।[74]

नारीत्व का अभिषाप लेख में हिन्दू नारी की घर और बाहर दोनों जगह एक ही सी स्थिति हैः

'हिन्दू नारी का' घर और समाज इन्हीं दो से विशेष सम्पर्क रहता है। परन्तु इन दोनों ही स्थानों में उसकी स्थिति कितनी करुण है इसके विचारमात्र से ही किसी भी सहृदय का हृदय काँपे बिना नहीं रहता। अपने पितृगृह में उसे वैसा ही स्थान मिलता है जैसा किसी दुकान में उस वस्तु को प्राप्त होता है जिसके रखने और बेचने दोनों ही में दुकानदार को हानि की सम्भावना रहती है। जिस घर में उसके जीवन को ढलकर बनना पड़ता है, उसके चरित्र को एक विशेष रूपरेखा धारण करनी पड़ती है, जिस पर वह अपने शैशव का सारा स्नेह ढुलकाकर भी तृप्त नहीं होती उसी घर में वह भिक्षुक के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। दुःख के समय अपने आहत हृदय और शिथिल शरीर

को लेकर वह उसमें विश्राम नहीं पाती, भूल के समय वह अपना लज्जित मुख उसके स्नेहांचल में नहीं छिपा सकती और आपत्ति के समय एक मुट्ठी अन्न की भी उस घर से आशा नहीं रख सकती। ऐसी ही है उसकी वह अभागी जनमभूमि, जो जीवित रहने के अतिरिक्त और कोई अधिकार नहीं देती!

पतिगृह, जहाँ इस उपेक्षित प्राणी को जीवन का शेष भाग व्यतीत करना पड़ता है, अधिकार में उससे कुछ अधिक परन्तु सहानुभूति में उससे बहुत कम है इसमें संदेह नहीं। यहाँ उसकी स्थिति पल भर भी आशंका से रहित नहीं। यदि वह विद्वान पति की इच्छानुकूल विदुषी नहीं है तो उसका स्थान दूसरी को दिया जा सकता है, यदि वह सौन्दर्योपासक पति की कल्पना के अनुरूप अप्सरा नहीं है तो उसे अपना स्थान रिक्त कर देने का आदेश दिया जा सकता है, यदि वह पति-कामना का विचार करके सन्तान या पुत्रों की सेना नहीं दे सकती, यदि वह रुग्ण है या दोषों का नितान्त अभाव होने पर भी पति की अप्रसन्नता की दोषी है तो भी उसे उस घर में दासत्व स्वीकार करना पड़ेगा। और इस विषय में उसके 'क्यों' का उत्तर देने को गृहस्वामी बाध्य नहीं, समाज बाध्य नहीं और धर्म भी बाध्य नहीं।[75]

ऐतिहासिक परिवेश में सीता के त्याग, अग्निशुद्धि, पवित्रता आदि का उदाहरण देकर यह सिद्ध किया है कि संसार ने इस त्याग को कभी पवित्रता पूर्वक स्वीकार नहीं किया है। उनका कहना है कि क्या नारी के बड़े से बड़े त्याग को आत्म-निवेदन को, संसार ने अपना अधिकार नहीं किन्तु उसका अदभुत दान समझकर नम्रता से स्वीकार किया है। पितृगृह में दुकान की वस्तु और पतिगृह में उपेक्षित पदार्थ-सी रहने वाली नारी का जीवन अभिशाप ही तो है। चाहे वह स्वर्ण-पिंजर की हो, चाहे लौह पिंजर की परन्तु बंन्दिनी तो वह है ही और ऐसी कि जिसके निकट स्वतंत्रता का विचार तक पाप कहा जाएगा।[76]

चाहे हिन्दू नारी की गौरव-गाथा से आकाश गूँज रहा हो, चाहे उसके पतन से पाताल काँप उठा हो परन्तु उसके लिए 'न सावन सूखे न भादों हरे' की कहावत ही चरितार्थ होती रही है।[77]

जिस समाजशास्त्री की भांति नारी की गृहस्थी का महादेवी ने चित्रण किया है, वह बिल्कुल सत्य है।

उपेक्षित करके सहनशीलता का उपहार दिया : उपेक्षित एवं सहनशीलता की बात करते हुए महादेवी ने बताया है कि आज तक समाज आधे सदस्यों-नारियों की सदस्यता को स्वीकार नहीं करता था। उसे त्यागमयी, ममतामयी, देवी कहकर संबोधित किया जाता, सहनशीलता और बलिदान की मूर्ति कह कर अमानुषिक यंत्रणाओं को सहने का अभ्यस्त

बना दिया गया है।[78]

नारी के मातारूप माता की प्रतिष्ठा प्राचीन काल में स्वीकार्य थी। महादेवी इसकी पुष्टि के लिए मोहन–जोदड़ो एवं सिंधु घाटी से प्राप्त अभिलेखों और अवशेषों का उदाहरण देती हैं और अपना दृष्टिकोण व्यक्त करती हैं कि उनमें मातृदेवी की मूर्ति है जो मातृसत्ता को प्रमाणित करती है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' मुक्ति से भी नारी के महिमा–मंडित रूप की स्पष्ट व्याख्या ध्वनित होती है। महादेवी नारी के दिव्यगुणों से प्रभावित होकर उसे भारतीय संस्कृति के रूप में सांख्य दर्शन में, माया के रूप में वेदान्त दर्शन में शक्ति के रूप में तंत्र साधना में, राधा–सीता के रूप में सगुणोपासना में, ब्रह्म की अंशभूत, प्रेयसी आत्मा के रूप में देखा है अतः उसे भारतीय संस्कृति का मेरूदण्ड मानना चाहिए।[79]

आज के समाज में नारी समाज का आवश्यक एवं अनिवार्य अंग है। महादेवी ने कहा है कि दुनिया की कोई भी भौतिकता या पुरुष इसकी रिक्तता के स्थान को भर नहीं सकता। उन्होंने नारी का उज्ज्वल पक्ष गरिमा को रखते हुए कहा है – ''स्त्री, में माँ का रूप 'सत्य', 'वात्सल्य', ही 'शिव' और ममता ही 'सुंदर' है। जब वह इन विषमताओं के साथ पुरुष के जीवन में प्रतिष्ठित होती है, तब उसका रिक्त स्थान भर लेना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य हो जाता है।

नारी चाहती है मूल अधिकार एवं सुरक्षित जीवन : नारी के मूल अधिकार के विषय में महादेवी ने कहा है : नारी समाज से केवल इतना ही चाहती है कि समाज उसके मूल अधिकारों जो उसे इतनी कठिनाइयों के बाद प्राप्त हुए हैं – नारी शिक्षा, नारी–स्वतंत्रता आदि से फिर उसे वंचित कर न दिया जाये। समाज उसके अधिकारों की रक्षा के लिए कानून, नियम या कोई विधान बनाये यह भी उसे स्वीकार्य नहीं है। क्यों कि वह जानती है कि ''कानून हमारे स्वत्वों की रक्षा का कारण न बनकर चीनियों के काठ के जूते की तरह हमारे ही जीवन के आवश्यक तथा जन्मसिद्ध अधिकारों को संकुचित बनाता जा रहा है।''[80]

सम्पत्ति के स्वामित्व से वंचित असंख्य स्त्रियों के सुनहले भविष्यमय जीवन कीटाणुओं से भी तुच्छ माने जाते देख कौन सहृदय रो–न देगा? चरम दुखस्था के सजीव निदर्शन हमारे यहाँ के सम्पन्न पुरुषों की विधवाओं और पैतृक धन के रहते हुए भी दरिद्र पुत्रियों के जीवन हैं। स्त्री पुरुष के वैभव की प्रदर्शिनी मात्र समझी जाती है और बालक के न रहने पर जैसे उसके खिलौने निर्दिष्ट स्थानों से उठाकर फैंक दिये जाते हैं, उसी प्रकार एक पुरुष के न होने पर न स्त्री के जीवन का कोई उपयोग ही रह जाता है, न समाज या गृह में उसको कहीं निश्चित स्थान ही मिल सकता है। जब जला सकते

थे तब इच्छा या अनिच्छा से उसे जीवित ही भस्म करके स्वर्ग में पति के विनोदार्थ भेज देते थे, परन्तु अब उसे मृत पति का ऐसा निर्जीव स्मारक बनकर जीना पड़ता है जिसके सम्मुख श्रद्धा से नत मस्तक होना तो दूर रहा, कोई उसे मलिन करने की इच्छा भी रोकना नहीं चाहता।[81]

इन्हीं कारणों से राष्ट्र कवि मैथलीशरण गुप्त ने नारी के जीवन की वास्तविकता को यशोधरा काव्य में इस प्रकार स्पष्ट किया है –

> ''अबला जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी।
> आँचल में है दूध और आँखों में पानी।''[82]

क्या नारी को यही जीवन जीना होगा? या फिर नारी को उसके मूल अधिकार मिलेंगे? यह प्रश्न समाज से है।

नारी शिक्षा एवं कर्तव्य : जहाँ तक नारी की शिक्षा का प्रश्न है, महादेवी जी पूर्णरूप से नारी–शिक्षा के पक्ष में हैं। उनकी दृष्टि में शिक्षा, शिक्षित और अशिक्षित दोनों को एक दूसरे से मिलाने वाला सेतू है। एक दूसरे से अलग करनेवाली खाई नहीं, विधेयक रूप है।[83]

शिक्षित स्त्रियाँ सही मायने में तभी जाग्रत कही जा सकेंगी जब वे भारत की, अंधकार में भटकने वाली वाणीहीन असंख्य नारियों की प्रतिनिधि बनकर जागें और उन्हें अपने अधिकारों से परिचित करा सकें।[84]

साधन–सम्पन्न नारियों द्वारा साधनहीन नारी–समाज को ऊपर उठने का आह्वान भी महादेवी ने किया है। ज्ञान–गरिमा से मंडित नारी–समाज को कर्तव्यशील बने के साथ ही अधिकारों को जीवित रखने की प्रेरणा भी वहाँ है। निम्न पंक्तियाँ नारी समाज की जागृति का संदेश देती हैं – ''अपने कर्तव्य की गुरुता भली–भाँति हृदयंगम कर यदि हम अपना लक्ष्य स्थिर कर सकें तो हमारी लौह श्रृंखलाएँ हमारी गरिमा से गलकर मोम बन सकती हैं, इसमें संदेह नहीं।[85]

शिक्षित नारियों को चाहिए कि वे शिक्षा अपने तक ही सीमित न रखें, बल्कि प्राप्त ज्ञान का उचित प्रयोग करें और पुरुष समाज से कहें कि वह अपनी कन्याओं के विवाह की इतनी चिंता न करें, उचित शिक्षा का प्रबंध करके ''उनके लिए रुचि के अनुसार कला, उद्योग, धंधे तथा शिक्षा के द्वार खुले हों, जो उन्हें स्वावलंबिनी बना सकें और अपनी शक्ति और इच्छा को समझकर यदि जीवनसंगी चुन सके तो विवाह उनके लिए तीर्थ होगा जहाँ वे अपनी संकीर्णता मिटा सकेंगी, व्यक्तिगत स्वार्थों को बहा सकेंगी और उनका जीवन उज्ज्वल से उज्ज्वलतर हो सकेगा।

नारी के जन्म,विवाह की चिन्ता एवं समस्या : जैसे ही कन्या का जन्म हुआ, माता–

पिता का ध्यान सबसे पहले उसके विवाह की कठिनाइयों की ओर जाता है, – ''जन्मदाता पराई धरोहर कह–कहकर किसी को सौंपने के लिए व्याकुल होने लगते, मानो विवाह के अतिरिक्त उसके जीने का अन्य साधन ही न हो।[86]

उसकी इच्छा–अनिच्छा, स्वीकृति–अस्वीकृति, योग्यता–अयोग्यता की न कभी किसी ने चिन्ता की और न करने की आवश्यकता का अनुभव किया। यदि कन्या कुरूपता के कारण विवाह की हाट में रखने योग्य नहीं है तो उसके स्थान में दूसरी रूपवती को दिखाकर रोगिणी है तो उस रोग को छिपाकर, सारांश यह है कि लालच से, छल से, झूठ से या अच्छे–बुरे किसी भी उपाय से उसके लिए पत्नीत्व का प्रबन्ध करना ही पड़ता है। यह सत्य है कि विवाह–जैसे उत्तरदायित्व के लिए समाज पुरुषों की भी योग्यता–अयोग्यता की चिन्ता नहीं करता, परन्तु उनके लिए यह बंधन विनोद आ साधन है, जीविका का नहीं। अतः वे एक प्रकार से स्वच्छन्द रहते हैं।

इसी प्रसंग में प्राचीनता की दुहाई देने वाले कुलों में बिना देखे–सुने जिस प्रकार उसका क्रय–विक्रय हो जाता है, वह तो लज्ञा का विषय है ही परन्तु नवीनता के पूजकों में भी विवाह–योग्य कन्या को, बिकने के लिए खड़े हुए पशु की तरह देखना कुछ गर्व की वस्तु नहीं। जिस प्रकार भावी पति–परिवार के व्यक्ति उसे चलाकर, हँसाक, लिखा–पढ़ाकर देखते हैं तथा लौटकर उसकी लम्बाई–चौड़ाई, मोटापन, दुबलापन, नख–शिख आदि के विषय में अपनी धरणाएँ बताते हैं, उसे सुनकर दास–प्रथा के समय बिकने वाली दासियों की याद आये बिना नहीं रहती।[87]

नारी और नौकरी : अर्थ सामाजिक प्राणी के लिए एक अनिवार्य वस्तु है। इसके बिना जीवन की अनिवार्य–आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो सकती महादेवी के विचारों में 'इतने युगों से स्त्री जाति का जो मानसिक विकास नहीं हो पाया उसका मुख्य कारण यही रहा है कि उसे अर्थ–स्वातंत्र्य की प्राप्ति नहीं है। भले पिता का घर हो या भले पति का, दोनों ही घरों में अर्थ–स्वातंत्र्य प्राप्त करना भी चाहे तो पुरुष का पुरुषत्व इसे स्वीकार नहीं कर सकता। यदि कन्याओं को स्वावलंबिनी बना दिया जाए तो वे विवाह का विचार छोड़ देती है, यह समाज की धारण निराधार है।

कुछ लोगों का मानना है कि नारी को घर रहकर जो सम्मान मिलता है, वह घर के बाहर निकलने पर नहीं मिल पाता। बात कुछ हद तक सही भी है, क्योंकि घर और बाहर की जटिल परिस्थितियाँ उसके लिए समस्या पैदा कर सकती हैं। फिर भी इस संदर्भ में बड़ी दृढ़ता के साथ महादेवी का जवाब है कि समाज को यह मानना ही होगा कि स्त्री अपनी कोमल भावनाओं को जीवित रखकर भी कठिन से कठिन उत्तरदायित्व को निभा सकती है, दुर्वह से दुर्वह कर्तव्य का पालन कर सकती है और

दुर्गम से दुर्गम कार्यक्षेत्र में ठहर सकती है। परंतु यह सब जानते हुए भी समाज का कुछ हिस्सा स्त्री को घर से बाहर निकलने की अनुमति नहीं देता यही कारण है कि विवाह के बाद अधिकांश नारियों की जीवनी-शक्ति का विकास इस कारण नहीं हो पाता।

घर में और बाहर काम करती श्रमजीवी नारी की दयनीय स्थिति घर और बाहर काम करती श्रमजीवी नारी का समाज में स्थान कितना करुण व दुःखद है। महादेवी के शब्दों में – "एक किसान की पत्नी अपने घर का सारा काम करके खेती के कामों में अपने पति का हाथ बँटा सकती है।

श्रमजीवी श्रेणी की नारियाँ जब घर का सब काम समाप्त करके और संतान पालन करके बाहर जाकर सड़कों पर पत्थर तोड़ती हैं, तब समाज क्यों मौन धारण कर लेता है। "सवेरे छः बजे गोद में छोटे बालक को तथा भोजन के लिए एक मोटी काली रोटी लेकर मजदूरी के लिए निकली हुई स्त्री जब सात बजे संध्या समय घर लौटती हैं तो संसार भर का आहत मातृत्व मानो उसके शुष्क ओठों में कराह उठता है। उसे शान्त शिथिल शरीर से फिर घर का आवश्यक कार्य करते और उसे कभी-कभी मद्यप पति के निष्ठुर प्रहारों को सहते देखकर करुणा को भी करुणा आये बिना नहीं रहती। तब सब कुछ जानते हुए भी क्यों अनजान बना रहता है।[88]

युग-युग से पीड़ित नारी की यह आत्मिक माँग है। पुरुष सत्ता की रुढ़ियों से मुक्ति चाहिए।

रविंद्रनाथ के शब्दों में कहना समीचीन होगा।

"I am no goddess to be worshipped nor yet the object of common pity to be brushed a side like a moth, with in difference. If you design to keep me by your side in the path of danger and during, if you allow me to share the great duties of your life, then you will know my true self."

अर्थात मैं देवी नहीं हूँ कि जिसकी सदा पूजा की जाये, कृमिकारकों के समान पैरों की नीचे भी कुचला जाना नहीं चाहती। मेरी सच्ची परीक्षा तभी होगी जब मुझे पुरुषों के कंधे से कंधा मिलकर जीवन कलह में झगड़ने की, कठिनाइयाँ झेलने की अनुमति प्राप्त होगी।

रविन्द्रनाथ ठाकुर – स्त्री-पुरुष समानता से प्रेरित हो कर नारी नौकरी तो करने लगी लेकिन क्या उसकी समस्याएँ समाप्त हुई? आगे इसी का उत्तर हमें ढूढ़ना है।[89]

साहित्य सर्जक के रूप में नारी : घर में बैठकर नारी साहित्य-सर्जन कर सकती है। इस संदर्भ में महादेवी के विचार बड़े विचारणीय हैं – "साहित्य यदि स्त्री के सहयोग

से शून्य हो तो उसे आधी मानव जाति के प्रतिनिधित्व से शून्य समझना चाहिए। पुरुष के द्वारा नारी का चरित्र अधिक आदर्श बन सकता है, परंतु अधिक सत्य नहीं, विकृति के अधिक निकट पहुँच सकता है, परंतु यथार्थ के अधिक समीप नहीं। पुरुष के लिए नारीत्व अनुमान है, परंतु नारीत्व के लिए अनुभव। अतः अपने जीवन का जैसा सजीव चित्र वह हमें दे सकेगी, वैसा पुरुष बहुत साधना के उपरांत भी शायद ही दे सके।

नारी के अर्थ–स्वातंत्र्य का प्रश्न : घर में सब प्रकार की सुख–सुविधा होने पर भी नारी के अर्थ–स्वातंत्र्य को लेकर प्रश्न उठाया जाता है। इसका जवाब देते हुए महादेवी जी ने तुलना करके बताया है कि नारी और पुरुष दोनों समान रूप से एक दूसरे पर निर्भर हैं। अगर व्यावहारिक बात की जाए तो ''पुरुष अपने व्यवहारिक जीवन के लिये स्त्री पर उतना निर्भर नहीं है, जितना स्त्री को होना पड़ता है। स्त्री उसके सुखों के अनेक साधनों में एक ऐसा साधन है, जिसके नष्ट हो जाने पर कोई हानि नहीं होती.... स्त्री की स्थिति इससे विपरीत है। उसे प्रत्येक पग पर प्रत्येग सांस के साथ पुरुष से सहायता की भिक्षा माँगते हुए चलना पड़ता है।''

यदि यथार्थ रूप में अर्थ का जीवन में कितना महत्व है, इसको उदाहरण से समझना हो तो देखिए : ''अर्थ के अभाव में 16 वर्ष की लाड़ली कली को किसी 50 वर्ष के मुरझाये फूल के साथ बाँध देना पड़ा हो और अपने आँसुओं को थामते हुए आशीर्वाद देना पड़ा हो, बेटी सदा सुखी रहो।'' कितना करुण चित्र है, यह नारी के लिए! समाज के लिए।

नारी और दहेज प्रथा : वर्तमान समाज की एक प्रमुख समस्या है दहेज प्रथा। अनमोल विवाह का प्रमुख कारण दहेज प्रथा है। दहेज की कमी के कारण वर्तमान समाज में कन्या या विवाहित स्त्री की हत्या भी होती है। समाज का सम्पन्न वर्ग अपने 'काले धन' को खर्च करने के लिए दहेज देता है। इस प्रवृत्ति ने कम आय या के ईमानदार माता–पिता के लिए समस्याएँ पैदा कर दी हैं। कालान्तर में दहेज देना और लेना सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गाया है। आज दहेज के विरुद्ध सरकार ने कानून बनाया है।[92]

दहेज प्रथा आधुनिक समाज के लिए एक बड़ा कलंक है। दीमक की भाँति यह प्रथा संपूर्ण समाज को खाये जा रही है। नारी–स्वतंत्रता के साथ–साथ उसे वरण की भी स्वतंत्रता जरूरी है। दहेज लड़केवालों के लिए पहली शर्त है। इसलिए लड़की के पढ़े–लिखे होने या न होने, सुन्दर या कुरूप होने का उनकी दृष्टि में कोई महत्व नहीं है। लड़के लड़की की सहमति या असहमति का यहाँ कोई प्रश्न ही नहीं है। लड़केवालों की तरफ से दहेज की माँग लड़कीवालों के परिवार की एक विकट समस्या बन गयी है। दहेज रूपी राक्षसी प्रवृत्तिवाले समाज पर तीखा व्यंग करते हुए महादेवी जी लिखती

हैं – ''पति होने के इच्छुक युवकों की मनोवृत्ति के विषय में तो कुछ कहना व्यर्थ ही है। वे प्रायः पत्नी के भरण–पोषण का भार ग्रहण करने से पहले भावी श्वसुर से कन्या को जन्म देने का भारी से भारी कर वसूल करना चाहते हैं। एक विलायत जाने का खर्च चाहता है, दूसरा युनिवर्सिटी की पढ़ाई समाप्त करने के लिए रुपया चाहता है, तीसरा व्यवसाय के लिए प्रचुर धन माँगता है। सभी अपने आप को ऊँची से ऊँची बोली के लिए की नीलाम पर चढ़ाये हुए हैं। लेकिन प्रश्न यह उठाता है कि क्या यह क्रय–विक्रय, यह व्यवसाय स्त्री के जीवन का पवित्रम बन्न कहा जा सकेगा? क्या इन्हीं पुरुषार्थ पराक्रमहीन पतियों से वह सौभाग्यवती बन सकेगी?''

नारी और वैश्या–जीवन : नारी के वैश्या–जीवन की चर्चा करते हुए महादेवी स्पष्ट शब्दों में कहती हैं कि केवल पुरुष समाज ही इनको इस स्थिति में पहुँचाने के उत्तरदायी हैं। कोई भी नारी अपनी इच्छा से ऐसा कोई व्यवसाय नहीं चुनना चाहती, जिसमें उसे अपने कोमल भावनाओं को कुचलकर सारी इच्छाओं का गला घोंट देना पड़े। समाज ही उसे अपने सौंदर्य की हाट लगाने को विवश करता है। वैश्याओं ने भी कभी किसी पुरुष को हृदय की संपूर्ण अनुभूतियों के साथ आत्मसमर्पण किया था किन्तु पुरुष ने मात्र उसकी समर्पण–वृत्ति को एक खेल समझा। उन्मत्त भ्रमर की भाँति कला का संपूर्ण रस चूसा और उसे असहाय की भाँति ठोकरें खाने को छोड़ दिया।[92]

महादेवी कितने सहानुभूतिपूर्ण ढंग से वैश्या–जीवन पर विचार करती हैं, इसे देखिये–

'यदि स्त्री की ओर से देखा जाय तो निश्चय ही देखने वाला काँप उठेगा। उसके हृदय में प्यास है, परन्तु उसे भाग्य ने मृग–मरीचिका में निर्वासित कर दिया है। उसे जीवनभर आदि से अन्त तक सौंदर्य की हाट लगानी पड़ी, रूप का क्रय–विक्रय करना पड़ा और परिणाम में उसके हाथ आया निराश–हताश एकांकी अन्त। जीवन की एक विशेष अवस्थ तक संसार उसे चाटुकारी से मुग्ध करता रहता है, झूठी प्रशंसा की मदिरा से उन्मत्त करता रहता है, उसके सौन्दर्य–दीप पर शलभ–सा मँडराता रहता है, परन्तु उस मादकता के अन्त में, उसे बाढ़ के उतर जाने पर, उसकी और कोई सहानुभूति–भरे नेत्र भी नहीं उठाता। उस समय उसका तिरस्कृत स्त्रीत्व, लोलुपों के द्वारा प्रशंसित रूप–वैभव का भग्नावशेष क्या उसके हृदय को किसी प्रकार की सांत्वना भी दे सकता है या जिन परिस्थितियों ने गृह–जीवन से उनका बहिष्कार किया, जिन व्यक्तियों ने उसके काले भविष्य को सुनहले स्वप्नों से ढाँका, जिन पुरुषों ने उसके नुपुरों की रुन–झुन के साथ अपने हृदय के स्वर मिलाये और जिस समाज ने उसे इस प्रकार हाट लगाने के लिए विवश तथा उत्साहित किय, वे क्या कभी उसके एकाकी अन्त का भार

कम करने लौट सके ?[93]

बड़े दुःख के साथ महादेवी कहती हैं कि पुरुष की बर्बरता, रक्त–लोलुपता पर बलि होने वाले युद्ध–वीरों के चाहे स्मारक बनाये जावें पुरुषों की अधिकार–भावना को अक्षुण्ण रखने जलती चिता पर मर मिटने वाली नारियों का इतिहास होगा परन्तु पुरुष की कभी न बुझने वाली वासनाग्नि में अपने जीवन को तिल–तिल जलानेवाली इन रमणियों को मनुष्यजाति ने कभी दो बूंद आँसू पाने का अधिकारी भी नहीं समझा। दुःख भरी जीवनगाथा लिखता, जो इसके रोम–रोम को जकड़ लेनेवाली 'शृंखला की कड़ियाँ' ढालने वालों के नाम गिनाता और इनके मधुर जीवन के पात्र में तिक्त विष मिलाने वाले का पता देता।''[94]

अन्त में महादेवी जी 'दुःख व्यक्त करती हैं... ''कभी कोई इतिहासकार ऐसा नहीं हुआ जो इन मूक प्राणियों की दुःखभरी जीवन गाथा लिखता, जो इनके अन्धेरे हृदय में इच्छाओं के उत्पन्न और नष्ट होने की करुण कहानी सुनाता।[95]

पतित नारी के विषय में गाँधी जी ने अपना विचार व्यक्त किया है – ''मुझे यह मंजूर है कि पुरुष जाति का नाश हो जाये, मगर यह मंजूर नहीं कि भगवान की पवित्रतम सृष्टि को अपनी वासना का शिकार बनाकर हम पशुओं से भी गये बीते बन जाँए।''[96]

महादेवी वर्मा का अन्याय के खिलाफ विचार : 'शृंखला की कड़ियाँ' पुस्तक पढ़ने से ऐसा लगता है कि महादेवी वर्मा ने पुरुष जाति के प्रति प्रतिशोध लेने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञा हो चुकी है। परन्तु उन्हें संपूर्ण पुरुष जाति से कोई विरोध नहीं है। 'शृंखला की कड़ियाँ'की भूमिका में महादेवी ने लिखा है – ''अन्याय के प्रति मैं स्वभाव से असहिष्णु हूँ। अतःइन निबंधों में उग्रता का स्वर स्वभाविक है। परन्तु ध्वंस के लिए ध्वंस के सिद्धान्त में मेरा कभी विश्वास नहीं रहा।''

आधुनिकताओं की भर्त्सना एवं समन्वय का सिद्धान्त : महादेवी के गद्य साहित्य में अनुस्यूत नारी विषयक मान्यताओं का यह अर्थ नहीं है कि वे आँख मूँदकर नारियों का समर्थन करती हैं। महादेवी न तथाकथित आधुनिकताओं की निन्दा करती है, जो अपने दायित्वों से बेखबर होती हैं। उनके अनुसार आज के समाज में दो प्रकार की स्त्रियाँ हैं। उनमें एक प्रकार की स्त्रियाँ वे हैं जो अपने समुदाय को एक अंग अथवा एक सदस्य भी नहीं समझती हैं और अपने स्वतंत्र व्यक्त्वि के बारे में उनका ज्ञान नहीं है। दूसरे प्रकार की स्त्रियाँ पुरुष के समाज समाज में अधिकार पाने के लिए उसका अन्धानुकरण करती हैं और समाज में पुरुष से स्पर्धा करना ही अपना परमलक्ष्य समझती है। इस प्रकार नारी की इस सोचनीय स्थिति का मूल कारण ही अन्धानुकरण है, जो उसे आदर भी नहीं दिला देता वरन उसे पुरुष के सामने तुच्छ बना देता है और भारतीय नारी

जो एक जमाने में सर्वस्व समझी जाती थी तत्कालीन समाज में कहीं की न रह गयी।

महादेवी वर्मा प्राचीन एवं नवीन विचारों का समन्वय करना चाहती हैं। नारी को खिलौना न समझा जाये, जरा से मतभेद में नारी न कचहरी के कठघरे में जा खड़ी हो जाये। महादेवी का सिद्धान्त आधुनिक युग की अल्ट्रा मोडर्न–फैशन की देवियों के सिद्धान्त की भाँति नहीं है जो कहती हैं कि जब दूसरे देशों की नारियाँ डेढ़ गज कपड़े में अपना तन ढाँक लेती हैं तो हमें ही क्यों सात गज कपड़ा पहनने के लिए विवश किया जाता है महादेवी जी ने 'शृंखला की कड़ियाँ' में जो कुछ भी कहा, भारतीयता एवं मानवता को समझ रखकर ही कहा है। उन्होंने सिर्फ पुरुष समाज को ही उपदेश नहीं दिया, उन शिक्षित स्त्रियों को भी समझाया है, जो अपने कर्तव्य को भूल बैठी हैं। यदि ये हमारी संस्कृति की रक्षक, भविष्य की निर्माता होती तो क्या खिलौना–सा सार शून्य आडम्बर शोभा देता! जब उनके द्वार पर भविष्य की विधाता संतान प्रतीक्षा कर रही हो, मानवता रो रही हो? दैव गर्ज रहा हो, पीड़ितों का हाहाकार गूँज रहा हो, तब भारत की नारी दर्पण के सम्मुख पावडर क्रीम से खेलती होगी! इस भूखे देश की महाशक्ति को शृंगार का अवकाश ही कहाँ ? हमारे यहाँ संतान अभाव नहीं है – अभाव है माताओं का, अनाथालय भरे हैं, पाठशालाएं पूर्ण हैं, बहुत बड़ी संख्या में बालक बालिकाएँ अनाथ की तरह मारे–मारे फिर रहे हैं। इन्हीं की माता बनने का, इन्हें योग्य बनाने का व्रत ग्रहण कर ले, उन्हें मनुष्य बनाने में किसी दिन इनके द्वारा नवीन रूपरेखा पाकर देश, समाज सब आज की नारी शक्ति पर श्रृद्धांजलि चढ़ाने में अपना गौरव समझेंगे।

नारी : त्याग की देवी : हमारे भारतीय संस्कृति में नारी को माता के रूप में गौरवशाली स्थान दिया गया –

''या देवी सर्व भूतेषु, मातृ रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।''[97]

भारतीय नारी आज तक मौन साधकर कष्ट झेलती रही, इसका वर्णन महादेवी ने बड़े सुंदर शब्दों में किया है : ''जीर्ण से जीर्ण कुटीर में बसने वालों में कदाचित कोई ऐसा अभागा होगा, जिसके उजड़े आँगन में सहनशील, त्यागमयी, ममतामयी स्त्री न होगी। स्त्री किस प्रकार अपने हृदय को चूर–चूर कर पत्थर की देवी प्रतिभा बन सकती है....

विधवा को देखिये जो प्रिय इच्छओं को कुचल–कुचल कर निपूर्ण कर देती है, सतीत्व और संयम के नाम शरीर और मन को अमानुषिक यंत्रणाओं को झेलने को अभ्यस्त बना लेती, अपनी आँखों में अमंगल के आँसू की बूँद भी नहीं आने देती। किस प्रकार जन्म–जन्मांतर का भगवान से वरदान मांगती। कहने को हमारा समाज स्त्री

और पुरुष दोनों को गाड़ी के दो पहिए मानता है, परन्तु कथन को करनी का रूप दे देंगे, उसी दिन हमारी सारी समस्याओं का अंत हो जाएगा।[98]

और एक बार फिर भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति रूप में स्थान मिल जायेगा। दुर्गा सप्तशती में कहा गया है –

''या देवी सर्व भूतेषु, शक्ति रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।''[99]

इस प्रकार महादेवी वर्मा ने भारतीय समाज में नारी की अनेकानेक समस्याओं को चित्रित किया है। सामाजिक वातावरण में पैदा हो रही गलत मान्यता गलत सोच, आदि समस्याओं पर हमारा ध्यान केन्द्रित कराया है। खास करके भारतीय पुरुष अपने विचारों में चिन्तन करके नारी को उतनी गलत न समझे, स्त्री पुरुष दोनों के ही सहयोग से पृथ्वी पर सुन्दर समाज व्यवस्था आनी है। इन्हीं दोनों के संबंध को महाभारत में धर्मराज युधिष्ठिर ने यक्ष से कहा था – 'माँ पृथ्वी से भारी होती है और पिता आकाश से भी ऊँचा।[100]

यह कितना सत्य है कि आकाश को छू लेना पूर्णतया अभाव है। ठीक उतना ही सत्य है पृथ्वी से पृथक होना। पृथ्वी सृष्टि का आलंबन है आकाश केवल छाया। जिस प्रकार धरती व आकाश के माध्यम से सृष्टि संचालन सुचारू रूप से होता है। उसी प्रकार स्त्री पुरुष के समान उन्नयन से ही सृष्टि का कल्याण संभव है।[101]

अंत में मैं बताना चाहूँगी कि जब 'शृंखला की कड़ियाँ' महादेवी जी स्त्री की दशा के विषय में लिख रहीं थीं तब हमारा देश आज़ाद नहीं था, सामाजिक क्रांति हो रही थी। यह कहा जा सकता है कि महादेवी जी की यह पुस्तक सामाजिक चेतना लाने में सहायक रही।

संदर्भ सूची

1. शिवानी के उपन्यासों में समाज, डॉ सिद्राम खोत, प्रकाशक – रोली बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृष्ठ 64
2. महादेवी और युगबोध, श्रीमती नीलम मुकेश, पुस्तक : महादेवी साहित्य का अभिनव मूल्यांकन, प्रकाशक : जनार्दन प्रकाशन, लखनऊ पृष्ठ 172
3. महाश्वेता महादेवी, देवेन्द्र सत्यार्थी, पुस्तक : महादेवी वर्मा काव्य–कला और जीवन–दर्शन, सम्पादिका शची रानी गुर्टू , रामलाल पुरी आत्माराम एण्ड सन्स प्रकाशन, पृष्ठ 16
4. भक्ति काव्य का समाज शास्त्र, प्रेमशंकर, प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन पृष्ठ 104
5. महादेवी वर्मा का नारी विषयक दृष्टिकोण – डॉ. दुर्गा देवी अग्रवाल, पुस्तक : महादेवी साहित्य का अभिनव मूल्यांकन, प्रकाशक : जनार्दन प्रकाशन, लखनऊ पृष्ठ 228
6. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, प्रकाशक : अनुभव प्रकाशन, कानपुर पृष्ठ 129
7. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ 42 से 43
8. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, प्रकाशक : अनुभव प्रकाशन, कानपुर पृ.124
9. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ 47
10. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ 12
11. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ 67
12. अतीत के चलचित्र के अविस्मरणीय संस्मरण डॉ. कुसुमवहन जे चौहाण, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य सम्पादक डॉ. एन.आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 329
13. महादेवी वर्मा अतीत के चलचित्र, पृष्ठ 67
14. अतीत के चलचित्र के अविस्मरणीय संस्मरण डॉ. कुसुमबहन, जे चौहाण, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार, मुख्य सम्पादक डॉ. एन आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 329
15. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 27
16. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 85
17. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 90 से 91
18. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 34
19. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 47
20. प्रेमचन्द साहित्य में व्यक्ति और समाज, डॉ. रक्षापुरी, पृष्ठ 164
21. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 10 से 11
22. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 68
23. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 70
24. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 41
25. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 40
26. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 79
27. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 41
28. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 52
29. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 87
30. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 83
31. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 88 से 89
32. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 11
33. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 32
34. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 32 से 33
35. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 34
36. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 10
37 स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 9

38. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 10
39. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 32
40. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 24
41. निर्मला, प्रेमचन्द, भारत प्रकाशन, लखनऊ पृष्ठ 36
42. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 46
43. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 10
44. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 27
45. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 26
46. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 29
47. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 29 से 30
48. महादेवी वर्मा का गद्य, प्रो. जगमोहन प्रसाद मिश्र, गद्य साहित्य का उद्भव और विकास (गद्य विशेषांक का संग्रह) संपादक डॉ. शम्भुनाथ पाण्डेय प्रकाशक फूलचन्द सरस्वती, आगरा, पृष्ठ 194
49. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 46
50. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 47
51. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 59
52. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 70
53. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 11
54. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 54
55. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 87
56. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 88
57. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 92
58. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 93
59. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 94
60. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 97
61. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 70
62. अतीत के चलचित्र, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 68
63. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 23
64. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 24
65. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना (1947 से 1970 तक) डॉ. सोफिया मैथ्यू , प्रकाशक : सूर्यभारती प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ 65
66. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, प्रकाशक : अनुभव प्रकाशन, कानपुर पृष्ठ 121 से 123
67. स्मृति की रेखाएँ, महादेवी वर्मा, पृष्ठ 10
68. महादेवी वर्मा और नारी समस्या, डॉ. एन. एम. कलार्थी, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार, मुख्य सम्पादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 483
69. महादेवी का गद्य साहित्य विश्लेषण और स्वरूप डॉ. गोवर्द्धन सिंह, प्रकाशक : अनुभव प्रकाशन, कानपुर पृष्ठ 128
70. नारी विमर्श के संदर्भ में महादेवी वर्मा, प्रतीक्षा पटेल, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य सम्पादक डॉ. एन. आर. परमार, दर्पण प्रकाशन, वल्लभ विग्यानगर, गुजरात पृष्ठ 425
71. महादेवी वर्मा और नारी समस्या, डॉ. एन एस कलार्थी, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य सम्पादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 483
72. नारी विमर्श के संदर्भ में महादेवी वर्मा, कपिला एम. पटेल, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य सम्पादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 432
73. महादेवी वर्मा का नारी विषयक दृष्टिकोण, डॉ. श्रीमती दुर्गा देवी अग्रवाल, पुस्तक : महादेवी–साहित्य का अभिनव मूल्यांकन, संपादक असीम मधुपुरी प्रकाशक : जनार्दन प्रकाशन, लखनऊ पृष्ठ 231
74. भारतीय समाज की समस्याएँ और प्रेमचन्द – जितेन्द्र श्रीवास्तव, प्रकाशक : शब्द सृष्टि, मौजपुर, दिल्ली पृष्ठ 13
75. शृंखला की कड़ियाँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, पृष्ठ 74

76. नारी–विमर्श के संदर्भ में महादेवी वर्मा कपिला एम. पटेल, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य, संपादक डॉ. एन.आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 434
77. शृंखला की कड़ियाँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ 32
78. नारी–विमर्श के संदर्भ में महादेवीं वर्मा, कपिला एम. पटेल, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 434
79 नारी विमर्श के संदर्भ में महादेवी, डॉ. धीरजभाई आर. वणकर, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य संपादक डॉ. एन आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 444
80. महादेवी वर्मा और नारी समस्या, डॉ. एन.एम. कलार्थी, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 485
81. गद्यकार महादेवी और नारी समस्या – अमृतराय, पुस्तक : महादेवी वर्मा काव्य–कला और जीवन दर्शन सम्पादिका शचीरानी गुर्टू, रामलाल पुरी आत्माराम एण्ड सन्स प्रकाशन, पृष्ठ 135 से 136
82. नारी विमर्श के संदर्भ में महादेवी वर्मा प्रतीक्षा पटेल, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार, मुख्य संपादक डॉ. एन.आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 24
83. महादेवी वर्मा और नारी समस्या, डॉ. एन. एम. कलार्थी, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य संपादक डॉ. एन.आर. परमार प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 486
84. नारी विमर्श के संदर्भ में महादेवी वर्मा प्रतीक्षा पटेल, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य संपादक डॉ. एन.आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 455
85. नारी विमर्श के संदर्भ में महादेवी वर्मा प्रतीक्षा पटेल, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य संपादक डॉ. एन.आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 447
86. महादेवी वर्मा और नारी समस्या डॉ. एन एम. कलाथी पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य संपादक डॉ. एन.आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 486
87. शृंखला की कड़ियाँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, पृष्ठ 67
88. महादेवी वर्मा और नारी समस्या डॉ. एन.एम. कलार्थी, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार, मुख्य सम्पादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 486 से 488
89. हिन्दी मराठी नाटकों में नारी डॉ. वसुधा जोशी, चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर पृष्ठ 44
90 महादेवी वर्मा और नारी समस्या, डॉ. एन.एम. कलार्थी, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार, मुख्य सम्पादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात 488 से 490
91. महादेवी वर्मा और नारी समस्या, डॉ. एन.एम. कलार्थी, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार, मुख्य सम्पादक डॉ. एन. आर परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 489
92 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना 1947 से 1970 तक डॉ. सोफिया मैथ्यु, प्रकाशक : सूर्यभारती प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली, पृष्ठ 62
93. नारी विमर्श के सन्दर्भ में महादेवी डॉ. धीरजभाई आर. वणकर, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार, मुख्य सम्पादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात 448
94. गद्यकर महादेवी और नारी–समस्या, अमृतराय, पुस्तक : महादेवी वर्मा काव्य–कला और जीवन दर्शन, संपादक–शचीरानी गुर्टू प्रकाशक : रामलालपुरी आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली पृष्ठ 135 से 136
95. महादेवी वर्मा और नारी समस्या, डॉ. एन.एम. कलार्थी, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार, मुख्य सम्पादक डॉ एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 489
96. नारी विमर्श के सन्दर्भ में महादेवी डॉ. धीरजभाई आर. वणकर, मुख्य संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 448
97. भगवती चरण वर्मा के उपन्यास में युगीन सामाजिक चेतना, डॉ. जवाहर लाल सिंह, प्रकाशक : कला प्रकाशन, वाराणसी पृष्ठ 179
98. महादेवी वर्मा और नारी समस्या, डॉ. एन. एम. कलार्थी, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार,मुख्य संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 489 से 490
99. नारी विमर्श के संदर्भ में महादेवी वर्मा, प्रतीक्षा पटेल, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार,मुख्य संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 426

100. महादेवी वर्मा का नारी विषयक दृष्टिकोण, डॉ. दुर्गादेवी अग्रवाल, महादेवी साहित्य का अभिनव मूल्यांकन, संपादक : असीम मधुपुरी, जनार्दन प्रकाशन, लखनऊ, पृष्ठ 232

101. महादेवी वर्मा काव्य कला और जीवन दर्शन, अमृतराय, पुस्तक : गद्यकार महादेवी और नारी – समस्या, संपादिका शचीरानी गुर्टू, प्रकाशक : रामलालपुरी आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली पृष्ठ 146